संयुक्तांक : 2023-24 अंक : 02

समावेश

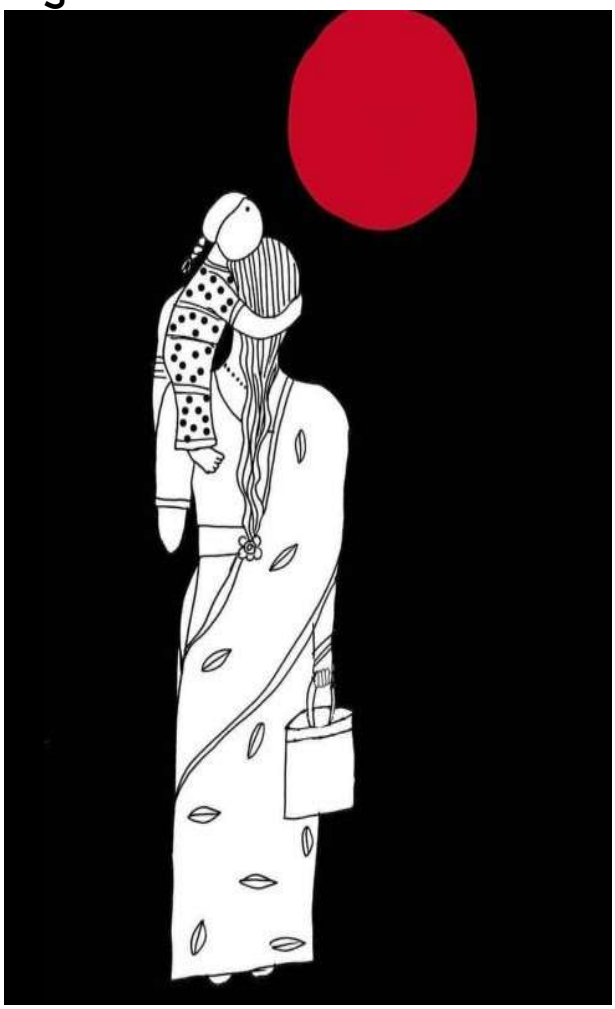

रेखांकन : अनुप्रिया

संरक्षक एवं प्रधान संपादक
प्रो. कमल किशोर पांडे

परामर्श :
डॉ. अनिल कुमार सैनी

संपादक :
डॉ. खेमकरण 'सोमन'

सहायक संपादक :
डॉ. सन्ध्या चौरसिया
डॉ. संगीता

छात्र-संपादक :
सपना, नेहा, उज़मा खान, शिवानी, मानसी, निकिता, अंशिका, दिव्या, अन्नू पांडे, रितिका, सोनम, किरण, बंटी, प्रिया कश्यप, कविता, शुभांशी, सुहानी, दीपक कुमार, मन्तशा बी, राहुल सिसौदिया, नेहा मौ. उमर, यश, निशा

तकनीकी संपादक :
डॉ. अतीश वर्मा
डॉ. ललित कुमार
डॉ. संजय सिंह बिष्ट
डॉ. कैलाश उनियाल

संपादकीय सम्पर्क :
संपादक, हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर
[ऊधम सिंह नगर] पिन-262401
ईमेल: khemkaransoman07@gmail.com

संरक्षक एवं प्रधान संपादक की कलम से...

प्रो. कमल किशोर पांडे
प्राचार्य

प्रिय छात्र-छात्राओं, कुछ सप्ताह पहले मैंने सोशल मीडिया पर एक कहानी पढ़ी, जिसे अब मैं आपके सामने प्रस्तुत करना चाह रहा हूँ। कहानी यह है कि एक बार, विश्व विख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन से उनके ड्राइवर ने कहा, "सर, मैं इतने वर्षों से आपके साथ हूँ। मैंने हर सेमिनार और मीटिंग में आपके द्वारा दिए गए प्रत्येक भाषण को बहुत ग़ौर से सुना और याद किया है।"

आइंस्टीन ये सुनकर बहुत हैरान हुए। कुछ देर तक बहुत गम्भीरता से सोचने के बाद उन्होंने ड्राइवर से कहा, "ठीक है, अगले सेमिनार के आयोजक मुझे नहीं जानते। आप मेरे स्थान पर वहाँ बोलिए, और मैं आपका ड्राइवर बनकर आपके साथ चलूँगा।

ठीक ऐसा ही हुआ। सेमिनार में अगले दिन उनका ड्राइवर मंच पर चढ़ गया और भाषण देने लगा और आइंस्टीन एक कोने में खड़े हो गए। भाषण के समापन के बाद उपस्थित विद्वानों ने जोर-शोर से तालियाँ बजाईं। ड्राइवर की बातों को सुनकर सभी बहुत प्रभावित हो गए।

तभी सेमिनार में उपस्थित एक प्रोफेसर ने ड्राइवर से पूछा, "सर, क्या आप उस सापेक्षता के सिद्धांत को फिर से समझा सकते हैं, थोड़ी-बहुत कन्फ्यूजन है मुझे ?"

असली आइंस्टीन ने जब ये घटनाक्रम देखा तो वे बहुत परेशान हो गए कि अब क्या किया जाए। हकीकत तो सबके सामने आने वाली है। बेचारा वाहन चालक पकड़ा जाएगा और अपनी जो बेइज्जती होगी, सो अलग। लेकिन अगले ही क्षण महान वैज्ञानिक आइंस्टीन अपने ड्राइवर का जवाब सुनकर हैरान रह गए। ड्राइवर ने बहुत सज्जनता से कहा, "क्या बोल रहे हैं महोदय, यह बिलकुल आसान सी बात आपके दिमाग में नहीं आई ? यह मामूली सी बात आप मेरे ड्राइवर से पूछिए। वह आपको बहुत अच्छी तरह समझा देगा। फ़िलहाल मुझे और कुछ कहने की जरुरत नहीं है। उसके बाद आइंस्टीन ने बाक़ी सब संभाल लिया।

00

प्रिय छात्र-छात्राओं, आइंस्टीन के जीवन संबंधी यह कहानी या इसके माध्यम से मैं क्या कहना चाह रहा हूँ, आप अच्छी तरह समझ रहे होंगे। हम अपनी संगति, साथ और संपर्क यदि अच्छे लोगों से रखें तो उसका प्रभाव हमारे आचार, विचार, भाव और व्यवहार पर पड़ता है।

जैसा कि आइंस्टीन के जीवन-दर्शन, भाषण शैली का प्रभाव उनके ड्राइवर पर पड़ा। निस्संदेह, उनके ड्राइवर के अंदर भी सीखने की महान ललक रही होगी। तभी उसने भी आइंस्टीन की संगति का सकारात्मक लाभ उठाया। मैं ये कहना चाह रहा हूँ कि आप खूब पढ़ें, और नए-नए लोगों और विशेषकर शिक्षकों, लेखकों, बुद्धिजीवियों और चिंतनशील युवाओं के साथ अपनी संगति, और साथ बढ़ाइए जो आपके जीवन को पल्लवित पुष्पित करें। ताकि आप जो सोचते हैं, वो बन सकें। स्मरण रहे अपनी सोच-समझ, अपनी वैचारिकी विकसित करने के लिए निरंतर सृजनात्मकता, और सृजनात्मकता के लिए निरंतर सोच-समझ विकसित करने की आवश्यकता होती है।

00

महाविद्यालय द्वारा किया गया यह प्रयास छात्र-छात्राओं की रचनात्मकता को पल्लवित करने तथा आत्मविश्वास पैदा करने में प्रभावी कदम होगा, जिससे विद्यार्थी किसी भी विषय पर खुले दिमाग से चिंतन कर समस्याओं के कई अभिनव समाधान निकालने में भी सक्षम होंगे। सामान्य भाषा में लिखूँ तो छात्र-छात्रा खूब पढ़ें, मनन करें, अपनी कल्पनाओं को शब्द व आकार दें, जिससे वह कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के शोध एवं लोकप्रियकरण हेतु भी अपनी प्रभावी भूमिका निभाने में सक्षम होंगे।

00

'समावेश' का यह पहला अंक अब आपके हाथों में है। मुझे प्रसन्नता हो रही है कि इस पत्रिका में महाविद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त छात्र-छात्राओं ने भी लिखा। विचार करें तो महाविद्यालय की पत्रिका पर पहला अधिकार छात्र-छात्राओं का ही है। अब जबकि प्रकाशित होने के सुअवसर उपलब्ध हैं अतः मैं बार-बार बस यही कहूँगा कि वे अपनी सृजनात्मकता दिखाएँ, और खूब लिखें, विभिन्न मुद्दों पर निरंतर लिखें। अपने मन की बातें लिखें। अपने जीवन प्रसंग, संघर्ष को लेकर डायरी लिखें। जीवन का उतार-चढ़ाव लिखें। यक़ीनन, इससे उन्हें बहुत लाभ होगा, और पत्रिका एवं महाविद्यालय परिवार को भी।

00

ऑनलाइन पत्रिका 'समावेश' के लिए हिंदी विभाग प्रभारी डॉ. संध्या चौरसिया सहित डॉ. अनिल कुमार सैनी, डॉ. खेमकरण 'सोमन', डॉ. संगीता, डॉ. अतीश वर्मा, डॉ. संजय सिंह बिष्ट, डॉ. कैलाश उनियाल, डॉ. ललित कुमार और नई पहल का हिस्सा बनने के लिए विशेषकर छात्र-संपादकों को बधाई-शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि यह टीम महाविद्यालय में सृजनात्मकता को बढ़ावा देगी।

आपको यह अंक कैसा लगा, मुझे अवश्य बताएँ।

–

प्रो. कमल किशोर पांडे

अनुक्रम

संरक्षक एवं प्रधान संपादक की कलम से... 02

संपादकीय... 55

आलेख

डॉ. अनिल कुमार सैनी 05

डॉ. खेमकरण 'सोमन' 10

डॉ. जय सिंह 12

डॉ. संगीता 47

डॉ. रंजीत सिंह 53

कविता

डॉ. ललित कुमार 09

वीरेन डंगवाल 11

नेहा 12

डॉ. संजय सिंह बिष्ट 14

उजमा खान 19

निशा 19

डॉ. रीता सचान 20

डॉ. अनिल कुमार सैनी 20

सपना 38

मिथुन विश्वास 44

डॉ. रीता सचान 45

मंगलेश डबराल 45

निराला 46

शिरीष कुमार मौर्य 46

लघुकथा 15-18

सुकेश साहनी

दिनेश भट्ट

रंगनाथ दिवाकर

पारस दासोत

शैलेन्द्र सागर

परिचर्चा 21-35

मिथुन विश्वास, अन्नू पांडे, नेहा, खुशी सागर उजमा खान, बली मोहम्मद, मन्तशा बी, तन्नू, आदर्श कुमार, डॉ. कैलाश उनियाल, दीपक कुमार चौधरी, डॉ. योगेश पांडे, सपना, दिव्या, कु. संतोष, संध्या सागर, सताक्षी शर्मा, डॉ. संजय सिंह बिष्ट, डॉ. अतीश वर्मा

मेरी आपबीती

निकिता 36

कहानी

डॉ. खेमकरण 'सोमन' 39

महाविद्यालय गतिविधियाँ 49-52

रिपोर्ट :

डॉ. पूजा रानी

डॉ. खेमकरण 'सोमन'

डॉ. वंदना

डॉ. हितेंद्र शर्मा

डॉ. संजय सिंह बिष्ट

विशेष

जीवन के उद्देश्य को कैसे पहचाने ?

डॉ. अनिल कुमार सैनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

उच्च शिक्षा में अध्ययन-अध्यापन के लगभग 13 वर्षों में मैंने अनुभव किया है कि अधिकांश विद्यार्थी बिना अपने विषय एवं उद्देश्य को जाने महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं। यह बिल्कुल ऐसे ही हैं जैसे किसी बस में बैठ जाना बिना यह जाने की उनका गंतव्य क्या है? इसका परिणाम यह होता है कि कुछ विद्यार्थी जाने अनजाने किसी गंतव्य पर पहुँच तो जाते हैं लेकिन वे जीवन भर उसे कार्य को ढोते रहते हैं और एक निराशा और उत्साहहीन जीवन जीने के लिए विवश होते हैं। मैंने अपने जीवन में जितनी भी पुस्तक पढ़ी हैं उनमें से एक पुस्तक है इकिगाई (Ikigai) जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए अपने विषय में जानने तथा जीवन के उद्देश्य को पहचानने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसलिए मैं यहाँ हेक्टर गार्सिया एवं फ्रांसिस्क मीरलेस द्वारा लिखी गई विश्व प्रसिद्ध पुस्तक इकिगाई (Ikigai) का सारांश प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जापान के एक द्वीप जिसका नाम ओकिनावा है, उसे पर एक लाख लोगों में से औसतन 24.55 लोग 100 साल से ज्यादा की उम्र के हैं, जो की पूरी दुनिया के औसत से बहुत ज्यादा है। जापान का एक गाँव जिसका नाम Ogimi है, उसको दुनिया में लंबी उम्र का गाँव के नाम से जाना जाता है क्योंकि वहाँ पर सबसे ज्यादा लंबी उम्र के लोग रहते हैं। तो आखिर में ऐसा कौन सा रहस्य है जापान के लोगों के पास जो उनको इतनी लंबी उम्र देता है।

इसी रहस्य के बारे में हमें यह किताब बताती है, और उसे रहस्य का नाम है इकिगाई।

क्या है इकिगाई?

इस किताब में हमें इकिगाई एक चित्र के माध्यम के द्वारा बताया गया है, जिसको हम आगे विस्तार से देखेंगे।

पहला कदम

जब आप वह काम जिससे आप प्यार करते हैं और जिसे आप करने में निपुण है, इन दोनों को मिला देते हैं तो बनता है PASSION

काम से प्यार + करने में निपुण = PASSION

दूसरा कदम

जब आप वो काम जिसे आप करने में निपुण है और उसको करने के लिए आपको पैसे भी मिलेंगे, इन दोनों को मिला देते हैं तो बनता है PROFESSION

करने में निपुण + काम के पैसे बराबर = PROFESSION

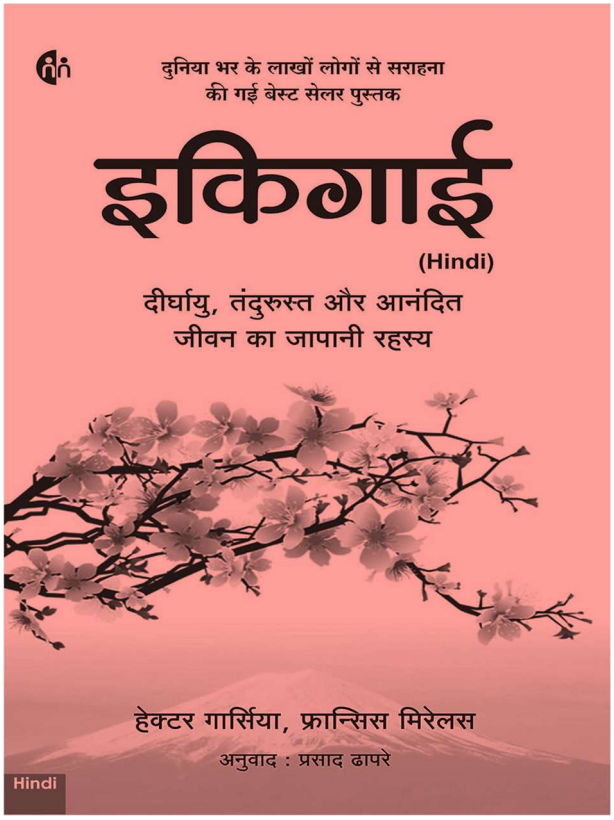

तीसरा कदम

जब आप वह काम जिसे करने से आपको पैसे मिलते हैं और दुनिया को उसे काम की जरूरत है, इन दोनों को मिला देते हैं तो बनता है VOCATION

काम के पैसे + दुनिया को जरूरी बराबर = VOCATION (उद्यम)

चौथा कदम

जब आप वह काम जिसकी दुनिया को जरूरत है और उस काम से आप प्यार भी करते हैं, इन दोनों को मिला देते हैं तो बनता है MISSION

दुनिया को जरूरत+काम से प्यार = MISSION

अंतिम कदम

अंतिम कदम में जब आप ऊपर दिए गए चारों कदम और मिला देते हैं तो बनता है-

PASSION + PROFESSION + VOCATION + MISSION = IKIGAI [इकिगाई]

जब भी आप कोई भी कार्य करें तो अपने आप से हमेशा पूछे कि क्या आपको वह काम करना अच्छा लगता है? क्या वह काम करने में आप निपुण है? क्या वह काम मुझे पैसे देगा? और क्या उस काम की दुनिया को जरूरत है? हर किसी का अपना IKIGAI होता है, उसी को हमें खोजना है। जापान के लोग उसी को पहचान कर अपनी जिंदगी उसी के अनुसार जीते हैं। ऐसे और क्या कारण है जो जापान के लोगों को इतनी लंबी उम्र और खुशहाल जिंदगी देती है? आइए देखते हैं।

सेवानिवृत्ति

क्या आपको पता है कि जापान की भाषा में रिटायरमेंट (Retirement) के मतलब जैसा कोई भी शब्द नहीं है। जापान के लोग अपने काम से भी कम से कभी भी रिटायर नहीं होते हैं, वे पूरी जिंदगी कुछ ना कुछ काम करते ही रहते हैं। लंबी और खुशी से भरी जिंदगी जीने के लिए आपको अपने काम से प्यार होना चाहिए तब आप कभी भी रिटायरमेंट के बारे में नहीं सोचेंगे, क्योंकि आपकी खुशी ही अब आपके काम में होगी न की घर में बैठकर शरीर को जंग लगाने में।

कम भोजन

जापान के लोग कभी भी भरपेट खाना नहीं खाते हैं, वे हमेशा अपनी भूख का 80% ही भोजन करते हैं। इसके लिए आप जब भी खाना खाएँ, जैसे ही आपका पेट भरने वाला हो तुरंत खाना बंद कर दें। जापान के लोग इसको करने के लिए एक थाली में भोजन नहीं करते बल्कि छोटे-छोटे बर्तन में भोजन करते हैं ताकि उनको लगे उन्होंने बहुत खा लिया लेकिन वास्तव में उन्होंने भोजन कम ही किया होता है।

तनाव : लंबी उम्र का दुश्मन

Heidelberg University Hospital ने एक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने 30 डॉक्टर को

जॉब इंटरव्यू के लिए भेजा, जहाँ उन्होंने बहुत ही ज्यादा कठिन सवालों को करने के लिए दिया गया। बाद में जब उनके ब्लड सैंपल लिए गए और उनका परीक्षण किया गया, तब पाया गया कि उनके शरीर में एंटीबॉडी ने तनाव को वैसे ही रिएक्ट किया है जैसे की वो Pathogens (बीमारी को पैदा करने वाले जीव) पर करती है। इसमें दिक्कत यह है कि जब यह एंटीबॉडी बनती है तो यह Pathogens को तो मरती ही है लेकिन साथ में हमारे healthy cells को भी मार देती है, जिससे हम उम्र से ज्यादा बूढ़े लगते हैं और सुस्त से मालूम होते हैं। क्योंकि हम हमेशा से ऐसे नहीं थे पहले हम शिकार के लिए जाया करते थे सिर्फ तभी तनाव लिया करते थे। लेकिन आज छोटी-छोटी बात को सोते रहते हैं और अपने हेल्दी सेल्स को मारते रहते हैं। पहले का तनाव सच्चा तनाव था मतलब कि जब कोई जानवर आप पर हमला कर देता था तो उसमें हमारी जान जा सकती थी लेकिन आज के खतरे सिर्फ नाम मात्र के खतरे है जो हम सिर्फ अपने दिमाग में बना लेते हैं लेकिन असल में वे होते भी नहीं है।

<u>ज्यादा देर तक न बैठे</u>

ज्यादा देर तक बैठने से आप जल्दी बूढ़े होंगे, ज्यादा देर तक बैठने से शायद आपको शारीरिक तौर पर आराम मिले लेकिन इससे आपकी सेल्स को नुकसान होगा, खाने का असंतुलन, हाइपरटेंशन, और यहां तक की कैंसर जैसी बीमारी भी हो सकती है। इससे बचने के लिए आपको बस अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में ये कुछ आदतें अपनानी चाहिए-

- रोज कम से कम 21 मिनट चलें।
- लिफ्ट एलीवेटर का इस्तेमाल न करें।
- सोशल एक्टिविटी में पार्टिसिपेट करो ताकि आप देर तक टीवी के सामने बैठ ना रहो।
- अपने जंक फूड पैकेट वाले फूड को अच्छे खाने से बदल दें।
- एक अच्छी क्वालिटी की 7-8 घंटे की नींद ले इससे ज्यादा ना सोएँ।
- अपने बच्चों या पालतू जानवर के साथ खेलें।

<u>काम पर ध्यान</u>

जो भी आप करते हैं उसको करते वक्त फॉक्स होना बहुत जरूरी है, फॉक्स होने से आपके काम में फ्लो आता है जिससे आप वह काम बहुत ही आसान और बिना थके कर सकते हैं। काम में फोकस और फ्लो लाने के लिए आपको नीचे लिखी बातों को फॉलो करना चाहिए।

<u>कठिन काम चुने</u>

हमेशा वह काम चुने जिसे करने के लिए आपको रिसर्च करनी होगी आपको मेहनत करनी होगी उसको करने के लिए आपके दिमाग को हमेशा सोचा होगा ताकि आपका फॉक्स बना रहे हैं। ध्यान रहे कोई ऐसा काम ना चुन ले जो आपकी एबिलिटी से बाहर हो और

उसको करना आपके लिए इतना ज्यादा कठिन हो कि कुछ दिनों बाद उसको करना बंद कर दें और कोई ऐसा काम भी ना करने लग जाए जो आपके लिए बहुत ही ज्यादा आसान हो जिससे करते वक्त आप बोर फील करें और उसको करना बंद कर दें।

स्पष्ट उद्देश्य

किसी भी काम को शुरू करने से पहले आपके पास उसको करने का क्लियर ऑब्जेक्टिव होना चाहिए की आपको क्या करना है कब करना है किस लिए करना है क्यों करना है। यह सब बातें आपको पहले से पता होनी चाहिए। जिसको खत्म करने के लिए एक समय निश्चित होना चाहिए ताकि उसको आप समय पर खत्म कर सकें और उसको आगे के लिए टाले ना।

एक समय में एक काम

हमें ऐसा लगता है कि एक साथ एक से ज्यादा काम करने से हम अपना समय बचाते हैं और ज्यादा काम कम समय में खत्म कर सकते हैं। लेकिन साइंटिफिक एविडेंस इसके बिल्कुल उल्टे हैं। जो लोग एक समय में एक से ज्यादा काम करते हैं वह काम को देर से खत्म करते हैं साथ ही उसे काम को करते वक्त वह बिल्कुल भी प्रोडक्टिव नहीं होते हैं। आप स्वयं देखे आप कितनी बार खाना खाते समय अपना मोबाइल इस्तेमाल करते हैं, पढ़ते वक्त टीवी देखते हैं, एक काम सोचते समय किसी और काम के विषय में सोच रहे होते हैं। अगर आपको अपना फोकस बढ़ाना है और काम में फ्लो चाहिए तो आपको एक समय में सिर्फ एक ही काम करना या सोचना चाहिए।

- जब आप सुबह उठे तो एक घंटे तक अपने फोन, लैपटॉप या टीवी की स्क्रीन बिल्कुल ना देखें।
- सोने से एक घंटा पहले अपने फोन की स्क्रीन ना देखें, इससे आपको नींद आने में मदद मिलेगी।
- काम करते वक्त फोन को स्विच ऑफ या दो नॉट डिस्टर्ब कर दें।
- हफ्ते में एक दिन टेक्निकल व्रत रखें जिससे अपना फोन का इस्तेमाल न करें।
- 50 मिनट काम और 10 मिनट आराम करें।
- बेकार के काम को ना कहना सीखें।

दुनिया के सबसे लंबी उम्र वाले लोग क्या खाते हैं?

वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन के अनुसार जापान में सबसे ज्यादा लाइफ एक्सपेक्टेंसी है आदमियों के लिए 85 साल और औरतों के लिए 87 साल। तो आईए देखते हैं कि जापान के लोग ऐसा क्या खाते हैं जिससे इतने लंबे समय तक जीते हैं।

क्या कम खाएँ

जापान के ओकीनावा के लोग नमक और चीनी बहुत ही कम खाते हैं, पेट भर के खाना नहीं खाते हैं। भूख का केवल 80% ही खाते हैं।

क्या खाते हैं?

जापान के लोग रोज औसतन 18 अलग-अलग तरह के फूड्स खाते हैं। फलों और सब्जियों की पाँच सर्विंग हर रोज लेते हैं, जिसमें अलग-अलग रंग की शिमला मिर्च, गाजर, पालक, गोभी आलू, और सोयाबीन होती हैं। 30% कैलोरी जापान के लोगों की सिर्फ सब्जी से आती है। हफ्ते में तीन बार मछली खाते हैं। नमक औसत 7 ग्राम से लेकर 12 ग्राम ही खाते हैं। जापान के 15 एंटी ऑक्सीडेंट फूड– Tofu (सोया दूध से बना पनीर), Miso (सोया को फर्मेंट करके बनाया जाता है), Tuna मछली, गाजर, करेला, Sea Kelp (समुंद्र का algae), पत्ता गोभी, Nori (समुद्र का Algae), प्याज, सोए स्प्राउट्स, खीरा, सोयाबीन, शकरकंद, शिमला मिर्च और जैस्मिन चाय।

इकिगाई हासिल करने से न केवल छात्र-छात्राओं के अध्ययन के प्रदर्शन में सुधार हो सकता है बल्कि मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। काम और संक्रमण की तनावपूर्ण अवधि के दौरान IKIGAI [इकिगाई] एक उपयोगी विधि है।

कविता

अभी बाक़ी है

डॉ. ललित कुमार
रसायन विज्ञान विभाग

रात की सिलवटें
अभी बाक़ी हैं,
ऐ आफ़ताब
मत निकल अभी,
चिड़ियों का चहकना
अभी बाकी है।

उनके रूह के अक्स पर
शिकन थी,
उनका दीदार करना
अभी बाकी है।

जाम से जाम टकराए
तो महफ़िल जवान हुई,
उनका-
नज़रों से पिलाना
अभी बाकी है।

कहते हैं कि
आप महफ़िल में
नज़र नहीं आते,
नज़रों का नज़रों से
मिलना
अभी बाकी है।

अब अपनी जुबाँ से
कुछ भी न कहो **'ललित'**
फूलों का महकना,
मिलना
खिलना,
अभी बाकी है।

आलेख

आज की डिजिटल दुनिया में किताबों की, क्या स्थिति और अहमियत है ?

डॉ. खेमकरण 'सोमन'
हिंदी विभाग

इसमें कोई शक नहीं कि विज्ञान, तकनीक और डिजिटल होती दुनिया के कारण मानवीय जीवन में सरलता, सहजता, रोचकता और रोमांच में अतिशय वृद्धि उत्पन्न हुई है। अब जीवन- समाज का प्रत्येक अंग, क्षेत्र और विषय, ऑनलाइन व्यवस्था के अंतर्गत समाहित होता जा रहा है। इस दृष्टि से किताबों की स्थिति और अहमियत पर विचार-विमर्श होना बहुत आवश्यक और स्वाभाविक है कि वर्तमान समय में ऑनलाइन किताबों का क्या महत्व है? क्या भविष्य में किताबें खत्म हो जाएँगी अथवा केवल ई-बुक फार्मेट में ही उपलब्ध होंगी जिसे केवल किंडल, फोन या लैपटॉप में पढ़ने की सुविधा होगी?

विचार करें तो पाएँगे कि इसकी प्रबल शुरुआत हो भी चुकी है। आज गूगल बुक्स, गुड-रीड्स, मैनी बुक्स, इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस डिजिटल लाइब्रेरी, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग और ओपन लाइब्रेरी आदि अन्य दर्जनों ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर पाठक अपनी मनपसंद किताबें पढ़ रहे हैं। बेशक, यह खर्चीली और महंगी व्यवस्था है मगर नए पाठकों की संख्या में लगातार वृद्धि भी रेखांकित हो रही है। इससे जीवन, समाज और कैरियर को भी ऊँचाई मिली है।

जैसा कि मैंने पूर्व में कहा और पुनः कहना चाहता हूँ कि यह अभी शुरुआत भर है। इस समय बेशक, सक्षम घर-परिवारों में नव्यतम और आधुनिकतम गैजेट्स हों, जिनके माध्यम से पाठक सरलतापूर्वक किताबें ऑनलाइन परचेज कर रहे हैं या मुफ़्त पढ़ रहे हैं, किंतु समग्र रूप से यह हर जगह संभव होता नहीं दिखता। कारण, ज्यादातर लोग अभी भी स्मार्ट फोन, टेबलेट्स या गैजेट्स खरीदने की स्थिति में नहीं, या खरीद भी चुके हैं तो गरीबी, अरुचि और अशिक्षा के परिणामस्वरूप उस चेतना का बड़ा अभाव मिलता है जिसे मेट्रो सिटी में बहुत सरलता से देखा जा सकता है। आखिरकार, ऑनलाइन किताब और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए सही और सकारात्मक मानसिकता चाहिए।

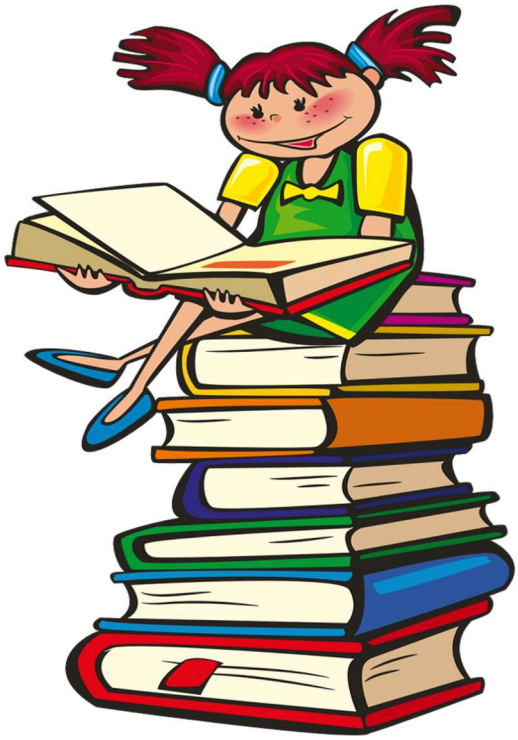

देखा जाए तो ऑनलाइन बुक्स पढ़ने का उपलब्धिपूर्ण प्रचलन कोविड-19 यानी 2020 से यकायक बढ़ना शुरू हुआ। यही समय था जब ऑफलाइन व्यवस्था ध्वस्त हो जाने के कारण पत्र-पत्रिकाओं, जर्नल, वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों की पीडीएफ फाइलें, व्हाट्सएप ग्रुप और ईमेल के माध्यम से पाठकों तक पहुँचने लगीं। जिन पत्र और पत्रिकाओं के नाम कभी सुने नहीं थे, उनके भी दर्शन होने लगे। कहने का आशय है कि ऑनलाइन पढ़ने की प्रवृत्ति में भरपूर बढ़ोत्तरी हुई। कोविड महामारी के कारण जब दुनिया भर की अर्थव्यवस्था, उद्योग धंधे, नौकरी

और व्यापार खत्म होने की स्थिति में थे। तब ऐसे में ई-फॉर्मेट और ऑनलाइन विकल्पों की भारी महत्ता प्रकट हुई और विशेषकर ऑनलाइन शिक्षा का कारोबार बहुत विस्तारित हुआ। अधिकांश स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटीज ऑनलाइन मोड में आ गए।

वर्तमान समय में ऐसे पचासों एप्लिकेशन अस्तित्व में हैं जिनके माध्यम से घर बैठे ऑनलाइन पढ़ाई-लिखाई और कमाई का लंबा-तगड़ा हिसाब है। अब तो दस वर्ष का बच्चा भी इतना ज्ञान रखने लगा है कि बड़े बुजुर्ग भी बस मुँह ताकते रह जाते हैं। यूट्यूब चैनल और गूगल का तो कहना ही क्या। इनके लिए तो प्रशंसा का हर शब्द अधूरा है।

कहने का आशय यह है कि किताब चाहे ऑनलाइन मोड में पढ़ें या ऑफलाइन मोड में, उसे पढ़ने का अपना ही रस, आनंद और विवेक है। चूंकि किताबों के प्रकाशन का प्रत्यक्ष संबंध प्राकृतिक संसाधनों से है, और वैश्विक स्तर पर प्राकृतिक संसाधन निरंतर कम हो रहे हैं, अतः यह कहने में कोई हिचक नहीं कि भविष्य में ऑनलाइन पढ़ने की आदतों में निरंतर वृद्धि ही होगी। इसे किसी भी स्थिति में रोका नहीं जा सकता। हाँ, पुरानी पीढ़ी बेशक... स्पर्श का आनंद और अनुभव लेते हुए, अपने हाथों में ही किताब लेकर पढ़ना चाहती है, परंतु नई पीढ़ी स्कूल, कॉलेज, मेट्रो या बस में कहीं भी, किसी भी स्थान पर हो, उसने ऑनलाइन पढ़ने की अच्छी आदत अच्छी तरह विकसित कर ली है। वास्तव में डिजिटल होती दुनिया ने किताबों की ऐसी दुनिया खोल दी है, जिसे आज से पहले कभी नहीं देखा गया। यकीनन, व्यस्तता के दौर में इससे अच्छा विकल्प कहीं नहीं मिल सकता। इसी कारण इसका चहुँदिशा स्वागत भी हो रहा है।

00

कविता

मसला

वीरेन डंगवाल

बेईमान सजे-बजे हैं
तो क्या हम मान लें कि
बेईमानी भी एक सजावट है?

क़ातिल मज़े में हैं
तो क्या हम मान लें कि
क़त्ल करना मज़ेदार काम है?

मसला मनुष्य का है
इसलिए हम तो हरगिज़ नहीं मानेंगे
कि मसले जाने के लिए ही
बना है मनुष्य।

प्रस्तुति : प्रिया दिवाकर
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर, हिंदी

कविता

नेहा
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

घर वालों के खाने के लिए
हमेशा कमाते हैं
पर अकसर घर वालों के साथ बैठकर
खा नहीं पाते हैं

सारी परेशानियाँ छुपाते हैं
सभी ग़मों को गले से लगाते हैं
एक पिता ही हैं जो पिता का किरदार
निभाते हैं

घर के हालात कैसे भी हों
हर पल परिवार के सामने
मुस्कुराते हैं
पिता वो इनसान हैं
जो कभी नहीं घबराते हैं

बेटियाँ इनके साये में राज करती हैं
औलाद की ख्वाहिशें पूरी करनें में
जी जान लगाते हैं
और खुद की
ख्वाहिशें पूरी करने को
तरस जाते हैं

लिखने को तो बहुत कुछ हैं
पिता के बारे में
पर
जितना लिखें सब कम हैं-

इसलिए
सही कहा है किसी ने
कोई दो दिन भी नहीं निभा सकता
ये किरदार
जो पिताजी ज़िंदगी भर
निभाते हैं।

00

आलेख

श्रीनिवास रामानुजन

डॉ. जय सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, गणित विभाग

श्रीनिवास रामानुज महान भारतीय गणितज्ञ थे, जिनका जन्म 22 दिसंबर 1827 दक्षिण भारत के कोयंबटूर के एक गाँव में हुआ था। इनकी माता का नाम कोमलताम्मल और पिता का नाम श्रीनिवास अय्यंगर था।

आधुनिक समय में महानतम गणितज्ञ में माने जाने वाले रामानुजन बचपन से ही बेहद प्रतिभावान थे। इन्होंने कोई विशेष प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था। फिर भी अपनी प्रतिभा और अभ्यास के परिणामस्वरूप गणित के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। इन्होंने अपनी प्रतिभा और लगन से न केवल गणित के क्षेत्र में अद्भुत अविष्कार किए वरन भारत को अतुलनीय गौरव भी प्रदान किया।

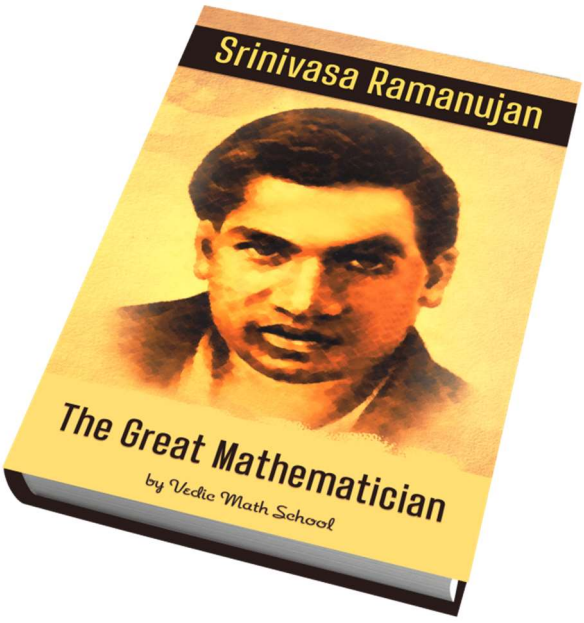

श्रीनिवास रामानुज तीन वर्ष की अवस्था तक भी बोल नहीं सके! यह स्थिति देख माता-पिता को लगा कहीं यह गूंगा ही न रह जाए, अतः स्कूल में नाम लिखवा दिया, पर रामानुजन को पढ़ने-लिखने में भी बिलकुल रूचि नहीं थी। शिक्षक उन्हें बहुत ही कमजोर बुद्धि का

समझते थे। परंतु आगे चलकर इन्होनें पढ़ाई में पूरी प्रेसीडेंसी टॉप किया।

रामानुजन अपने अध्यापकों से अकसर प्रश्न किया करते थे कि संसार का पहला व्यक्ति कौन था? समंदर की एक छोर से दूसरे छोर की लंबाई कितनी है? इत्यादि अटपटे प्रश्न। कुशाग्रबुद्धि की होने के साथ-साथ स्कूल-कॉलेज में उनका-स्वभाव इतना मधुर था कि कॉलेज के अन्य विद्यार्थियों के नियम रामानुजन पर लागू नहीं होते थे। गणित में प्रथम स्थान प्राप्त होने के कारण आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें छात्रवृत्ति दी गई। परंतु आगे के वर्षों में गणित में ज्यादा लगाव होने की वजह से रामानुजन अन्य विषयों में बेहद कमजोर होकर परीक्षा में फेल हो गए और उनकी छात्रवृत्ति रुक गई। इस प्रकार फेल होने के कारण उनकी आगे की पढ़ाई रुक गई।

कॉलेज छोड़ने के बाद आगामी पाँच वर्षों का समय इनके लिए बहुत हताशा भरा था। भारत इस समय परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा था। चारों तरफ भयंकर गरीबी थी। ऐसे समय में रामानुजन के पास न कोई नौकरी थी और न ही किसी संस्थान में अथवा किसी प्रोफेसर के साथ काम करने का मौका। बस उनका ईश्वर पर अटूट विश्वास और गणित के प्रति अगाध श्रद्धा ने उन्हें कर्तव्य मार्ग पर चलने के लिए सदैव प्रेरित किया। नामगिरी देवी रामानुजन के परिवार की इष्टदेवी थी। उनके प्रति अटूट विश्वास ने उन्हें कहीं रुकने नहीं दिया और वे विपरीत परिस्थितियों में भी गणित में शोधकार्य करते रहे। इस समय रामानुजन को ट्यूशन से कुल पाँच रूपये मासिक मिलते थे और इसी में गुजारा होता था। रामानुजन का यह जीवन काल बहुत कष्ट और दुःख से भरा था। उन्हें हमेशा अपने भरण-पोषण के लिए और अपनी- शिक्षा को जारी रखने के लिए इधर-उधर भटकना पड़ा और अनेक लोगों से असफल याचना भी करनी पड़ी।

<u>विवाह और गणित साधना</u>

वर्ष 1908 में माता पिता ने इनका विवाह जानकी नामक कन्या से कर दिया। विवाह के बाद इनके लिए सब कुछ भूलकर गणित में डूबना संभव नहीं था। अतः वे नौकरी की तलाश में मद्रास आ गए। बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण न होने की वजह से इन्हें नौकरी नहीं मिली। यही समय था जब उनका स्वास्थ्य भी बहुत बुरी तरह खराब हो गया। इलाज के लिए डॉक्टर भी जाते तो गणित में किए गए अपने कार्य जरूर दिखाते। इसी समय किसी के कहने पर रामानुजन वहाँ के डिप्टी कलेक्टर श्री वीरामास्वामी अय्यर से मिले। जो स्वयं गणित के विद्वान थे। उन्होंने रामानुज की प्रतिभा को पहचाना और 25 रूपये मासिक छात्रवृत्ति का प्रबंध कर दिया। यहाँ रामानुजन ने अपने अध्ययन कार्य को आगे बढ़ाया, और अपना प्रथम शोध पत्र प्रकाशित किया।

<u>प्रोफ़ेसर हार्डी से पत्राचार</u>

इसी समय रामानुजन ने अपने संख्या सिद्धांत के कुछ सूत्र प्रोफेसर शेष अय्यर को दिखाए तो उनका ध्यान लंदन के प्रोफेसर हार्डी की तरफ गया। प्रोफेसर हार्डी उस समय विश्व प्रसिद्ध गणितज्ञों में से एक थे और अपने सख्त स्वभाव और अनुशासन प्रियता के कारण जाने जाते थे। प्रोफेसर हार्डी के शोधकार्य को पढ़ने के बाद रामानुजन ने बताया कि उन्होंने प्रोफेसर हार्डी के अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर खोज निकाला है। अब रामानुजन का प्रोफेसर हार्डी से पत्र-व्यवहार प्रारंभ हुआ।

अब यहाँ से रामानुजन के जीवन में एक नए युग का सूत्रपात हुआ जिसमें प्रोफेसर हार्डी की बहुत बड़ी भूमिका थी। दूसरे शब्दों में कहा

जाए तो जिस तरह से एक जौहरी हीरे की पहचान करता है और उसे तराशकर चमका देता है, रामानुजन के जीवन में वैसा ही कुछ स्थान प्रोफेसर हार्डी का था। प्रोफेसर हार्डी आजीवन रामानुजन की प्रतिभा और जीवन दर्शन के प्रशंसक रहे। रामानुजन और प्रोफेसर हार्डी की यह मित्रता दोनो के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। एक प्रकार देखा जाए तो दोनों ने एक-दूसरे के लिए पूरक का काम किया। उस समय के कई प्रतिभाशाली गणितज्ञ जिनकी शोध पत्र के ऑफिसर हार्डी ने देखे थे, उनमें रामानुजन सबसे उत्कृष्ट थे।

आरंभ में रामानुजन ने अपने किए गए शोधकार्य को प्रोफेसर हार्डी के पास भेजा तो पहले उन्हें भी पूरा समझ में नहीं आया। जब उन्होंने अपने मित्र गणितज्ञों से सलाह ली तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि रामानुजन गणित के क्षेत्र में एक दुर्लभ व्यक्तित्व हैं और इनके द्वारा किए गए कार्य को ठीक से समझने और उसमें आगे शोध के लिए उन्हें इंग्लैंड आना चाहिए। अतः उन्होने रामानुजन को कैंब्रिज आने के लिए आमंत्रित किया। वहाँ जाकर के रामानुज ने प्रोफेसर हार्डी के साथ मिलाकर कई शोध कार्य किए। पर समय के साथ उनका गिरता स्वास्थ्य सबके लिए चिंता का विषय बन गया और एक समय के बाद अब डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। अंत में रामानुजन के विदा की घड़ी आ ही गई। 26 अप्रैल 1920 के प्रातः काल में वे अचेत हो गए और दोपहर होते होते उन्होंने प्राण त्याग दिए। इस समय रामानुजन की आयु मात्र 33 वर्ष थी। इनका असमय निधन गणित जगत के लिए अपूरणीय क्षति थी। देश-विदेश में जिन्होंने भी रामानुजन की असमय मृत्यु का समाचार सुना, वे स्तब्ध रह गए।

00

कविता

थोड़ा ही तो माँगा

डॉ. संजय सिंह बिष्ट
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भौतिक विज्ञान विभाग

थोड़ा ही तो दिया
ज्यादा कहाँ दिया
पर तुमसे वह भी न दिया गया!

थोड़ा ही तो कहा
ज्यादा कहाँ कहा
पर तुमसे वह भी न कहा गया!

थोड़ा ही तो सुना
ज्यादा कहाँ सुना
पर तुमसे वह भी न सुना गया!

थोड़ा ही तो चला
ज्यादा कहाँ चला
पर तुमसे वह भी न चला गया!

थोड़ा इसलिए दिया
क्योंकि
थोड़ा ही था मेरे पास
थोड़ा इसलिए कहा क्योंकि
थोड़ा कहना जरुरी था

थोड़ा इसलिए सुना
क्योंकि
थोड़ा भी कोई सुनना नहीं
चाहता था

थोड़ा इसलिए चला
क्योंकि
नहीं चलता तो
नहीं पहुँच पाता तुम तक।

पाँच लघुकथाएँ

स्कूल : सुकेश साहनी

"तुम्हें बताया न, गाड़ी छह घंटे लेट है," स्टेशन मास्टर ने झुँझलाते हुए कहा, "छह घंटे से पहले तो आ नहीं जाएगी... कल से नाक में दम कर रखा है तुमने।"

"बाबूजी, गुस्सा न हो," वह ग्रामीण औरत हाथ जोड़कर बोली, "मैं बहुत परेशान हूँ, मेरे बेटे को घर से गए तीन दिन हो गए हैं... उसे कल ही आ जाना था! पहली दफा घर से अकेला बाहर निकला है..."

"पर तुमने बच्चे को अकेला भेजा ही क्यों?" औरत की गिड़गिड़ाहट से पसीजते हुए उसने पूछ लिया।

"मति मारी गई थी," वह रूआँसी हो गई, "... बच्चे के पिता नहीं हैं, मैं दरियाँ बुनकर घर का खर्चा चलाती हूँ। पिछले कुछ दिनों से जिद कर रहा था कि कुछ काम करेगा। टोकरी-भर चने लेकर घर से निकला है..."

"घबराओ मत...आ जाएगा!" उसने तसल्ली दी।

"बाबूजी वह बहुत भोला है। उसे रात में अकेले नींद भी नहीं आती... मेरे पास ही सोता है। हे भगवान!...दो रातें उसने कैसे काटी होंगी? इतनी ठंड में उसके पास ऊनी कपड़े भी नहीं है..." वह सिसकने लगी।

स्टेशन मास्टर फिर अपने काम में लग गया था। वह बेचैनी से प्लेटफार्म पर घूमने लगी।

इस गाँव के छोटे-से स्टेशन पर चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था। उसने मन-ही-मन तय कर लिया था कि भविष्य में वह अपने बेटे को कभी खुद से दूर नहीं होने देगी।

आखिर पैसेंजर ट्रेन शोर मचाती हुई उस सुनसान स्टेशन पर आ खड़ी हुई। वह साँस रोके, आँखें फाड़े डिब्बों की ओर ताक रही थी।

ज

एक आकृति दौड़ती हुई उसके नजदीक आई। नजदीक से उसने देखा-तनी हुई गर्दन...बड़ी-बड़ी आत्मविश्वास से भरी आँखें... कसे हुए जबड़े... होंठो पर बारीक मुस्कान...

"माँ, तुम्हें इतनी रात गए यहाँ नहीं आना चाहिए था!" अपने बेटे की गम्भीर, चिन्ता भरी आवाज उसके कानों में पड़ी।

वह हैरान रह गई। उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था- इन तीन दिनों में इतना बड़ा कैसे हो गया?

00

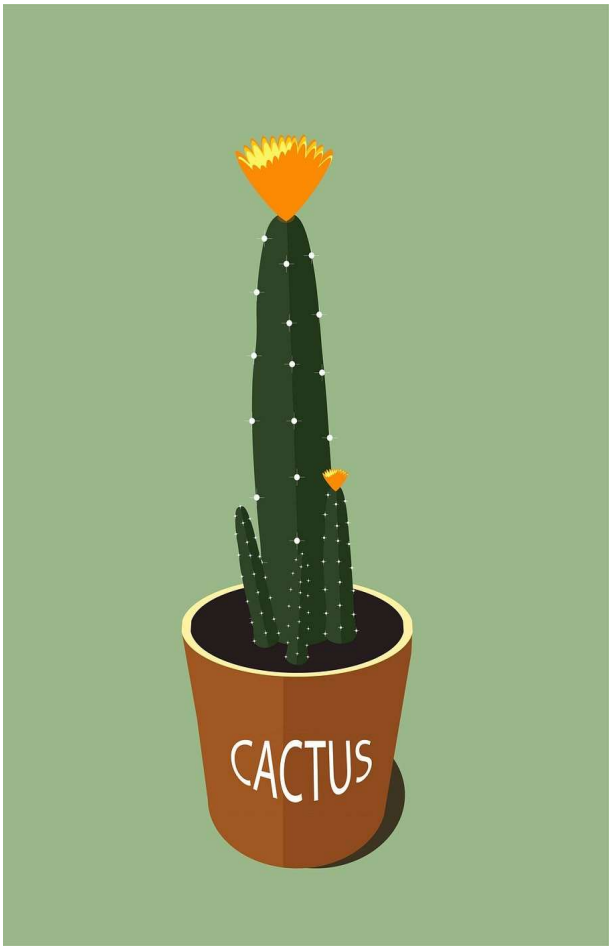

दंश : दिनेश भट्ट

इंजीनियरिंग कॉलेज के हॉस्टल में गिरीश और मुझे एक ही रूम मिला था। चौथे दिन पाँच सीनियर्स आए थे कमरे में।

"तुम दोनों का अटेस्टेशन हो गया ?" उन्होंने कड़ककर पूछा।
"नहीं....! यह अटेस्टेशन क्या है भैया?" हम भीतर तक काँप गए थे, उनकी आँखो को देखकर।
"रूम नम्बर अड़तालिस में पहुँचों, सब मालूम हो जाएगा।" कहकर वे चले गए।

गिरीश और मैं सिर से पाँव तक रैंगिंग के भय में डूबे पहुँचें थे रूम नम्बर अड़तालिस में। वे पाँचों किसी जूरी के सदस्य की तरह बैठे थे। उनके सामने एक बड़ी परात में नीला रंग घुला रखा था।

"अपने पैंट-चड्डी उतारो और इस परात में बैठो। फिर उठकर उस बड़े कागज पर बैठो। तुम्हारे पीछे की निशानी कागज पर बन जाए फिर उस पर हमसे साइन कराओ। यह अटेस्टेशन कागज तुम्हारे कमरे में हमेशा उपलब्ध होना चाहिए। कागज गुमा अटेस्टेशन फिर होगा।" बीच में बैठा सीनियर यह प्रक्रिया समझा रहा था। कमरे में तैरते उसके शब्द हमारे भय को द्विगुणित कर रहे थे। हमारे शरीर पसीने से तर गए थे और दिमाग सोचने-समझने की स्थिति में नहीं।

मैं बचपन से शर्मिला और संकोची रहा हूँ। मेरे लिए यह करना असम्भव था। मैंने शरीर की सारी शक्ति लगाकर शब्द जोड़े और हकलाकर कहा, "भैया मैं नंगा नहीं हो पाऊँगा।"

पाँचों ने विचित्र दृष्टि से मुझे देखा। एक सीनियर उठा था। उसका भारी हाथ मेरे बाएँ गाल पर इतना जबरदस्त पड़ा कि दो दिन तक गाल सूजा ही रहा।

"स्याला..." बिना अटेस्टेशन कराए रहेगा हॉस्टल में। पाँचों इतनी जोर से हँसे कि पूरा कमरा गूँज गया।
"शाम को तुम्हारा अटेस्टेशन हॉस्टल के सभी लड़कों के बीच होगा।" कहकर वे कहीं चले गए।

कमरे में लौटकर मैंने गिरीश से कहा-"मैं अटेस्टेशन नहीं कराऊँगा चाहे मुझे पढ़ाई छोड़कर घर वापस जाना पड़े।"
गिरीश बोला था," मैं वापस नहीं जाऊँगा। वापस जाकर मुझे खेती करनी पडेगी और फिर जल्दी ही शादी।"
शाम होने से पहले मैं सामान उठाए स्टेशन पर था।

गिरीश ने अटेस्टेशन करा लिया था। आज वह प्रथम श्रेणी का इंजीनियर है। मैंने नहीं कराया, मिडिल स्कूल शिक्षक हूँ।

कुछ घटनाएँ जो जिंदगी पर गहरा दंश छोड़ती है, उसके लिए एक छोटा शब्द भी जिम्मेदार होता है, जैसे मेरे लिए अटेस्टेशन।

गुरू दक्षिणा : रंगनाथ दिवाकर

गाँव महरैल का मध्य विद्यालय। एक काले-कलूटे छात्र को एक शिक्षक लगातार पीटे जा रहे थे। छात्र को जोर-जोर से चिल्लाते देख एक शिक्षक मना करते हैं, "बहुत हो गया झाजी! अब छोड़ दीजिए नहीं तो कल से विद्यालय आना ही बंद कर देगा।"

"अरे ई चोट्टा छोड़ता कहाँ है?" और लड़के को आठ-दस बेंत लगाकर हँसते हैं।

उसी समय विद्यालय में एक जीप आकर रूकती है। झाजी चुपके से बेंत हटा देते हैं। एक शिक्षक आगंतुक को पहचान जाते हैं- जिला शिक्षा अधीक्षक। कल ही तो मधुबनी में प्रभार लिया है।

जिला शिक्षा अधीक्षक महोदय की नजर उस कराहते हुए लड़के पर पड़ती है। क्षण भर ठिठककर वह मुस्कुराने लगते हैं। कहते हैं, "आइए मैं आप सबों को अपना दिव्यज्ञान दिखाता हूँ।"

स्वागत-सत्कार को नकारकर जिला शिक्षा अधीक्षक महोदय उस कराहते हुए लड़के के पास पहुँचकर कहना शुरू करते हैं, "मेरा दिव्यज्ञान कहता है कि यह लड़का निश्चित रूप से हरिजन है। इसे पिछले कई दिनों से लगातार मार पड़ रही है। इसे मारने वाले शिक्षक झाजी होंगे तो प्रायः बीस वर्षों से लगातार यहाँ 'विद्यादान' दे रहे हैं। मैं चाहूँ तो इतने शिक्षकों में से झाजी कौन हैं, यह भी बता सकता हूँ।"

पूरा विद्यालय परिसर शांत हो गया। शिक्षकों में आश्चर्य फैल गया। कुछ देर बाद उन्होंने झाजी को पहचानते हुए पूछा, "क्यों झाजी? आश्चर्य हो रहा है न मेरे दिव्यज्ञान पर? मुझे यह दिव्यज्ञान आपकी ही छड़ी ने दिया है। किसी हरिजन को मिडल पास न होने देने के आपके संकल्प को तोड़कर गुरूदक्षिणा चुकाने मैं आपके समक्ष खड़ा हूँ। नहीं पहचाना मुझे? मैं शिवचरण राम... आपका सिबुआ..."

विद्यालय में स्तब्धता छा गई। झाजी पसीने से तरबतर हो गए। जिला शिक्षा अधीक्षक महोदय ने कागज पर कुछ लिखा और चपरासी को दे दिया। प्राप्ति रसीद पर हस्ताक्षर करते समय झाजी का हाथ काँप रहा था।

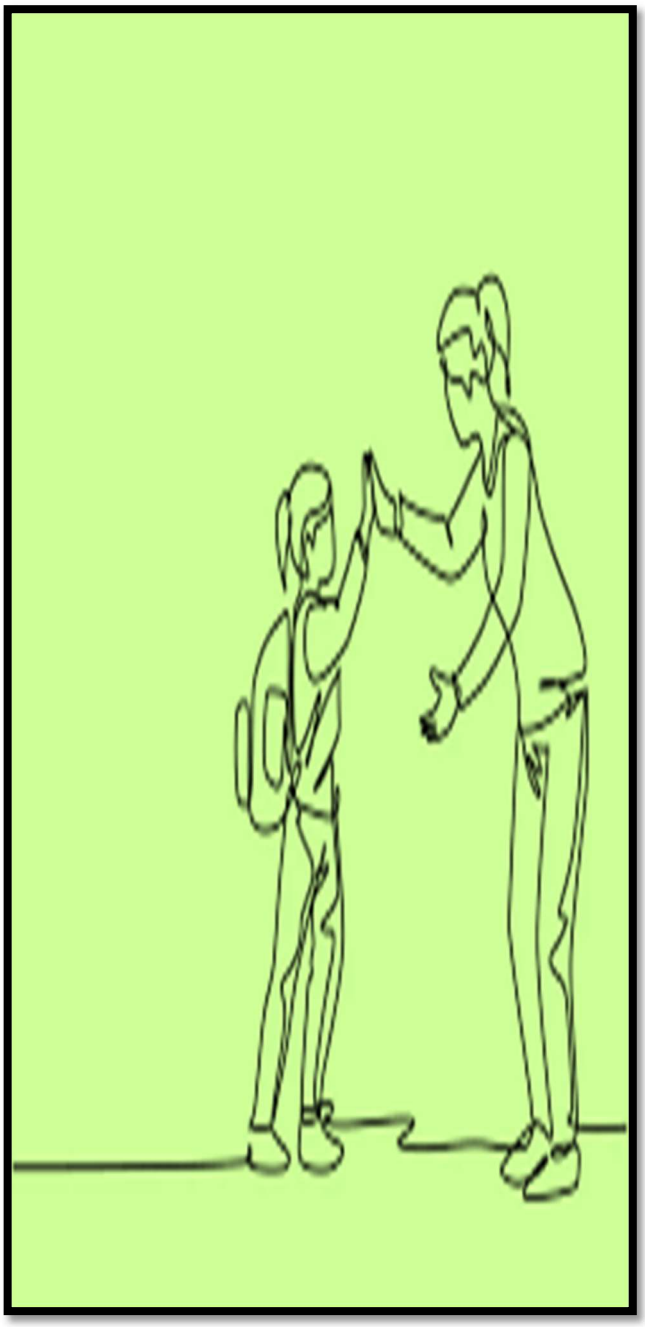

दो टुकड़े : पारस दासोत

आज... शिक्षिका उसके घर पर बच्चे को ट्यूशन पढ़ाकर हटी ही थी, उसने शिक्षिका से छेड़छाड़ करने की नियत से उसको अपनी कोहनी मार दी।

शिक्षिका कुछ न बोली।

बच्चे को होमवर्क देने के बाद, शिक्षिका जब अपने घर लौटने को हुई, उसने दरवाजे के पास ही पड़ी एक ईंट को उठाकर, मनचले की पत्नी से पूछा, "दीदी! क्या आप इस ईंट को अपनी हथेली की मार से तोड़ सकती हैं?"

"ये ईंट.sss! ना बाबा ना! इतनी ताकत ना है मेरे में!"
"अंकल..." शिक्षिका ने पास ही खड़े उसके मनचले पति से पूछा, "अंकल, आप, आप तोड़ सकते हैं, इस ईंट को?"

इससे पहले मनचला कुछ बोलता, शिक्षिका ने उसकी तरफ देखकर अपनी हथेली की एक मार से ईंट के दो टुकड़े कर दिए।

हिदायत : शैलेन्द्र सागर

पहली बार जब बालक विद्यालय गया तो माँ ने अध्यापक के संबंध में समझाया, "अध्यापक गुरू होते हैं। माँ-बाप से भी बढ़कर। उनका पूरा सम्मान करना चाहिए।"

"गुरू क्या होते हैं...?" बालक ने जिज्ञासा की।
"क्योंकि वे परिश्रम करके हम सबको पढ़ाते हैं। अच्छे गुण, अच्छी बातें सिखलाते हैं, अच्छे उपदेश देते हैं। कोई गलत कार्य नहीं करते, अच्छे व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।"

बालक उत्सुकतावश टकटकी बाँधे सुनता रहा।
"अध्यापक बच्चों से बड़ा प्यार करते हैं। आज उनका आशीर्वाद लेना न भूलना..." चलते समय माँ ने हिदायत दी।

मन असीम जिज्ञासाएँ व बाल-सुलभ कौतूहल लिए बालक कक्षा में बैठ गया। कक्षा का समय आरम्भ हो गया किन्तु अध्यापक महोदय का कहीं पता नहीं था। काफी समय बाद एक व्यक्ति चप्पलें घिसघिसाते कक्षा में आया और अध्यापक की कुर्सी में धंस गया।

शोर-शराबे का माहौल बन गया।

"चलो बैठो..." अध्यापक ने मेज पर अपने पैर फैला लिए।
"चल ओ लड़के। निकाल किताब...इधर खड़े होकर 'सूरज उगता' वाला पाठ पढ़..."

सहमा हुआ बालक उठा और एक ओर जाकर दबे स्वर में पढ़ने लगा- "उगता सूरज चिड़िया बोली।"
"अबे उल्लू, घर से भूखा आया है क्या, जोर-जोर से पढ़..." अध्यापक दहाड़े।

बालक का स्वर बढ़ गया।

अध्यापक महोदय ने जेब से बीड़ी का बंडल निकालकर बीड़ी सुलगाई और आँखे बंद करके लंबे-लंबे कश खींचने लगे।

"अबे गधे, रूक क्यों गया..." अचानक वह गरजे।

"मास्टर जी, पाठ समाप्त..." बालक का स्वर काँप गया।

"तो पहाड़े याद करा इन्हें..."

"जी मास्साब..."

"दो इकम दो, दो दूनी चार..."

पूरी कक्षा का स्वर इससे जुड़ गया।
अध्यापक महोदय ने आँखें पूरी तरह बंद कर ली और कहीं खो-से गए।

कुछ समय बाद छुट्टी की घंटी टनटनाई। शोर-शराबे के बीच अध्यापक एवं विद्यार्थी गण बाहर निकल पड़े। बालक को अचानक माँ की हिदायत याद आई। उसने तेजी से आकर उस बालक के पाँव छू लिए, जो पाठ पढ़ा रहा था।

00

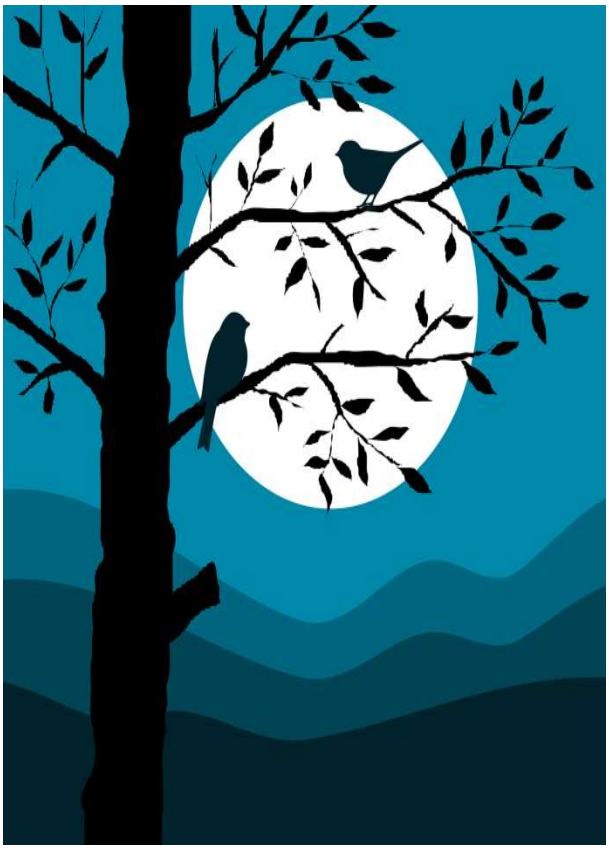

कविता

छोटी सी है ज़िंदगी

उजमा खान
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

छोटी सी है ज़िंदगी
हर बात मे खुश रहो

जो चेहरा पास न हो
उसकी आवाज में रहो खुश रहो

कोई रूठा हो आपसे
उसके अंदाज में खुश रहो

जो लौट के नहीं आने वाले
उनकी याद में खुश रहो

कल किसने देखा है
अपने आज में खुश रहो।

कविता

माँ तेरा रिश्ता

निशा
बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ तेरा रिश्ता दुनिया में
सबसे अनोखा है,
दुनिया लाख प्यार कर ले...
मगर, तेरी डॉट में छुपा प्यार भी
उनके प्यार से अनोखा है

तेरे प्यार के आगे
किसी का प्यार टिक ही नही सकता
गलती हमारी होने पर भी,
कोई हमें मना दे,
ऐसा शख्स दुनिया में
तेरे अलावा-
कोई हो ही नहीं सकता।

जीत लिया तुमने मन

डॉ. रीता सचान
एसोसिएट प्रोफ़ेसर,
वनस्पति विज्ञान विभाग

विदाई के क्षणों में बहती अश्रुधारा
कह रही है तुमसे, मन रो रहा है हमारा

जीत लिया तुमने मन, मन से हमारा
जीत न पाए हम मन तुमसे तुम्हारा

गर मिलेंगे तुमसे पूछेंगे दुबारा
इनकार न करोगे विश्वास है हमारा

इनसान के दिलों में बहती ही प्रेमधारा
इक दीप जला के देखो, जीत लेंगे जग सारा

धन वैभव सुख शांति इधर कुछ नहीं तुम्हारा
सब छूट जाएगा जब उसने पुकारा।

खेल के मैदान में

डॉ. अनिल कुमार सैनी,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग

आषाढ़ के महीने में
भरा था पानी
खेल के मैदान में

घास भी घना था
खेल के मैदान में
थी बहुत तेज धूप
खेल के मैदान में

काटती थी घास महिलाएँ
खेल के मैदान में
लगा था राष्ट्र ध्वज एक कोने में
खेल के मैदान में

खड़े थे शिक्षक
और कर्मचारी राष्ट्रगान के लिए
खेल के मैदान में
राष्ट्रगान हुआ शुरू
जब खेल के मैदान में
हो गई खड़ी हाथ जोड़
घास काटती महिला भी
खेल के मैदान में

देखकर राष्ट्र भक्ति
उस घास काटती महिला की
हो गए अभिभूत सभी खेल के मैदान में

करने लगे नमन सभी
घास काटती महिला को
खेल के मैदान में।

परिचर्चा

प्रश्न
1. आपकी दृष्टि में शिक्षा का क्या महत्त्व है ?
2. क्या कॉलेज शिक्षा के स्थान हैं या टाइम पास की जगह ? इस विषय में आप क्या सोचते हैं?
3. इन दिनों आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ऐसा क्यों ?

परिचर्चा में भाग ले रहे हैं :

मिथुन विश्वास
अन्नू पांडे
नेहा
खुशी सागर
उजमा खान
बली मोहम्मद
दिव्या, मन्तशा बी
तन्नू

आदर्श कुमार
डॉ. कैलाश उनियाल
दीपक कुमार चौधरी
डॉ. योगेश पांडे
कु. संतोष, सपना
संध्या सागर, सताक्षी शर्मा
डॉ. संजय सिंह बिष्ट
डॉ. अतीश वर्मा

मिथुन विश्वास

बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर

01. शिक्षा जीवन की कुंजी है। यह हमें ज्ञान, कौशल, और समझ प्रदान करती है जो हमें अपने जीवन में सफल होने में मदद करती है। शिक्षा हमें एक बेहतर इनसान भी बनाती है। शिक्षा मनुष्य का उत्थान करती है। यह हमें एक बेहतर भविष्य देती है।

02. मेरा मानना है कि कॉलेज का उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना है। हालांकि, यह छात्र पर निर्भर करता है कि वह कॉलेज को किस रूप में देखता है। यदि छात्र गंभीरता से अध्ययन करना चाहता है, तो कॉलेज उसके लिए एक शिक्षा का स्थान होगा। लेकिन यदि छात्र कॉलेज को केवल एक टाइम पास के रूप में देखता है, तो यह उसके लिए केवल एक टाइम पास की जगह बन सकता है।

03. इन दिनों आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है क्योंकि लोग मानसिक तनाव और अवसाद से जूझ रहे हैं। इसका कारण है बढ़ती प्रतिस्पर्धा, बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, और पारिवारिक समस्याएँ।

अन्नू पांडे

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

01. समाज में शिक्षा का महत्व काफी बढ़ चुका है। शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि एक व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सके। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक बहुत अवसर साधन है जिसमें हम समाज में समानता ला सकते हैं। शिक्षा का महत्व हमारे जीवन में अत्यधिक है क्योंकि यह हमें ज्ञान, समझ और सोचने की क्षमता प्रदान करता है। कहा गया है कि-

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

02: आजकल के कॉलेज शिक्षा के स्थान हैं, सिर्फ टाइम पास की जगह नहीं, क्योंकि कॉलेज में हमें नया ज्ञान और समझ मिलती है। साथ ही साथ व्यक्तित्व भी विकसित होता है। कॉलेज हमें अपने सपनों को साकार करने की तैयारी कराते हैं और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए कॉलेज के माध्यम से जिंदगी में अनुभव और सुख भरे पल भी मिलते हैं।

03: लोग अवसाद, लाचारी और जीवन में कुछ नहीं कर पाने की हताशा के चलते आत्महत्या करते हैं। मौजूदा दौर में आत्महत्या के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण तनाव है। आज की भागदौड़ की जिंदगी में अपनी मंजिल को न पाने पर लोग तनाव से परेशान हो जाते हैं और आत्महत्या के बारे में सोचते हैं। इसलिए मैं कहना चाहती हूँ कि हालातों से हारे

वक्त के मारे,
तुम भले ही दुनिया को लगो बेचारे
मगर जिंदगी की डोर को
ना छोड़ना-
आत्महत्या के सहारे।

नेहा

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

01. हमारे जीवन में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है आज के समय में हर व्यक्ति को शिक्षित होना ही चाहिए शिक्षा प्राप्त करने की ना कोई उम्र होती है ना कोई सीमा शिक्षा प्राप्त करना हर व्यक्ति के लिए बहुत जरूरी हो जाती है और आज के वर्तमान समय में शिक्षा की अत्यधिक जरूरत है यह ऐसे इस लिए है आज के वर्तमान समय में हर व्यक्ति अच्छी जिंदगी व्यतीत करना चाहता है इन सभी में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है अच्छी शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति अपना जीवन अच्छे से व्यतीत कर सकता है अच्छी शिक्षा से व्यक्ति अपने सपनों को पूरा कर सकता है समाज में अपना नाम बन सकता है और अपने परिवार जनों को एक अच्छी जिंदगी दे सकता है आज के वर्तमान समय में बिना शिक्षा के किसी भी व्यक्ति का कोई भी अस्तित्व नहीं है माँ-बाप अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं वह यह चाहते हैं की जो जिंदगी दुख और तकलीफ उन्होंने सही है वह आगे चलकर उनके बच्चे ना सके इसीलिए माँ-बाप अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं ताकि पढ़ लिखकर उनके बच्चे आगे चलकर समाज में अपना नाम करें और अच्छी जिंदगी व्यतीत करें।

02. कॉलेज शिक्षा का ही मंदिर होता है लेकिन हमारी जो नई पीढ़ी आ रही है उनकी मानसिकता दिन पर दिन खराब होती जा रही है उन्होंने स्कूल कॉलेज को टाइम पास करने का स्थान बना रखा है लेकिन पढ़ने वाले बच्चे स्कूल हो या कॉलेज वहां जाकर पढ़ते हैं और टाइम पास करने वाले बच्चे जाकर वहां पर टाइम पास करते हैं यह बात हमारे ऊपर सुनिश्चित करता है कि हमें क्या करना है हमारे भविष्य के लिए क्या सही है और क्या गलत कॉलेज में टाइम पास करने वाले व्यक्ति अपना भविष्य हमेशा खराब करते हैं लेकिन जो पढ़ाई करने वाले व्यक्ति होते हैं वह पढ़ लिखकर अपना भविष्य सवारते हैं कॉलेज कोई टाइम पास करने का जगह नहीं होता वह एक अवसर होता है जो हर व्यक्ति को मिलता है अपना भविष्य संवारने के लिए जो लोग घर पर रहकर नहीं पढ़ पाते वह कॉलेज में जाकर पढ़ते हैं कई बच्चों के पास पुस्तक नहीं होती इसीलिए वह कॉलेज में जाकर लाइब्रेरी से पुस्तक लेकर कॉलेज में पढ़ते हैं लेकिन आज के दौर में बहुत से बच्चे ऐसे हैं जो इस सोच

से परिचित नहीं है। वह कॉलेज आते हैं मौज मस्ती करते हैं और घर चले जाते हैं पर यह सब करके वह अपने आप को और अपने मां-बाप को धोखा दे रहे हैं उनके घर वालों को यह आस लगी रहती है कि मेरा बच्चा कॉलेज पढ़ने जा रहा है और पढ़ कर आता है पर वह ऐसा नहीं करते और कुछ बच्चे पढ़ते हैं लिखते हैं नई-नई चीज़ सीखने हैं कॉलेज में अपना योगदान देते हैं स्कूल कॉलेज में मित्रों का योगदान महत्वपूर्ण होता है कहते हैं ना- जैसी संगत वैसी रंगत अच्छे मित्र बनकर अच्छे से पढ़ाई करना और आवारा गलती करने वाले सही व्यक्ति को भी बिगाड़ के रख देते हैं इसीलिए कॉलेज में पढ़ने जाओ और औरों को भी प्रोत्साहित करो स्कूल कॉलेज कोई टाइम पास करने की जगह नहीं होती सो सुधारो देश सुधरेगा और देश सुधरेगा तब जाकर भारत आगे बढ़ेगा। कॉलेज में पढ़ने का अवसर बार-बार हर व्यक्ति को नहीं मिलता, अगर व्यक्ति को पढ़ने का अवसर मिला है तो उसका लाभ उठाओ। कई व्यक्ति ऐसे होते हैं जिन्होंने कॉलेज भी नहीं देखा होता है। आपको कॉलेज जाने का ऑप्शन मिल रहा है तो उसका सही इस्तेमाल करो और पढ़ाई करो। कॉलेज कोई टाइम पास करने की जगह नहीं होती।

03. इन दिनों व्यक्ति मानसिक रूप से कमजोर होता जा रहा है और वह अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना नहीं कर पाते है और वह आत्महत्या करने के रास्ते पर चले जाते हैं और वह अपने दुख तकलीफ को दूर करने का एकमात्र यही रास्ता आत्महत्या करने का रास्ता अपनाते हैं जिसके कारण समाज में लोग अपने आप को महसूस नहीं करते आत्महत्या का एक कारण यह भी है यदि व्यक्ति को समय पर किसी चीज की प्राप्ति ना हो या मन चाहे चीज की प्राप्ति ना हो तो वह व्यक्ति अपने आप को खत्म करना चाहता है।

इन दिनों व्यक्ति जितना तनाव ग्रस्त है, वैसी स्थिति अतीत में पहले कभी नहीं थी। लोगों की तेजी से बदलती जीवन शैली रहन-सहन और भौतिक वस्तुओं के प्रति अत्यधिक आकर्षण पारिवारिक विघटन और बढ़ती बेरोजगारी धन दौलत को सर्वश्रेष्ठ समझने की प्रवृत्ति के कारण आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं।

खुशी सागर

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

01. शिक्षा हमारे देश की प्रगति के लिए बहुत जरूरी है हमारे देश में शेरों की तुलना में गांव के लोग कम शिक्षित होते हैं शिक्षा हमारी खुद की और देश की प्रगति में मदद करती है शिक्षित आदमी को समझ में मान सम्मान भी खूब मिलता है हम शिक्षा के माध्यम से जीवन में बहुत सफलता प्राप्त कर सकते हैं इसलिए हमारे और समाज का शिक्षित होना जरूरी है शिक्षा के बल पर व्यक्ति अपने अपना आने वाला भविष्य बदल सकता है।

02. कॉलेज जीवन किसी व्यक्ति के जीवन के सबसे यादगार वर्षों में से एक माना जाता है। यह स्कूली जीवन से बिल्कुल अलग है। कॉलेज जीवन हमें नए अनुभवों और उन चीजों से परिचित कराता है जिसे हम पहले परिचित नहीं थे, परंतु कुछ लोगों के लिए वर्तमान कॉलेज जीवन का अर्थ है जीवन का भरपूर आनंद लेना और जमकर जमकर पार्टी करना, व कुछ लोग वर्तमान कॉलेज को टाइम पास की जगह मानते हैं परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है, यह व्यक्तियों के अपने अपने मत हैं। विचार करें तो कॉलेज ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ हर दिन एक नया सीखने का दिन होता है। कॉलेज में हमें ज्ञान और गतिविधियों के नए क्षेत्र का पता लगाने का मौका मिलता है जैसे- व्याख्यान प्रदर्शन कार्यशालाएँ पैनल चर्चाएँ, अतिथि वक्त वक्ताओं द्वारा व्याख्यान, प्रतियोगिताएँ और उत्सव आदि।

03. इन दिनों आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में हर साल लगभग 8 लाख लोग आत्महत्या करते हैं, जिनमें 21 फ़ीसदी आत्महत्या केवल भारत में होती है। हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता होगा जब किसी न किसी इलाके से गरीबी, भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगार और कर्ज जैसी तमाम आर्थिक तथा अन्य परेशानियों से परेशान लोगों के आत्महत्या करने की खबरें ना आती हों। अतः कॉलेज हो या समाज, हमें स्वस्थ वातावरण बनाना होगा जो मानसिक समस्याओं से मुक्त हो।

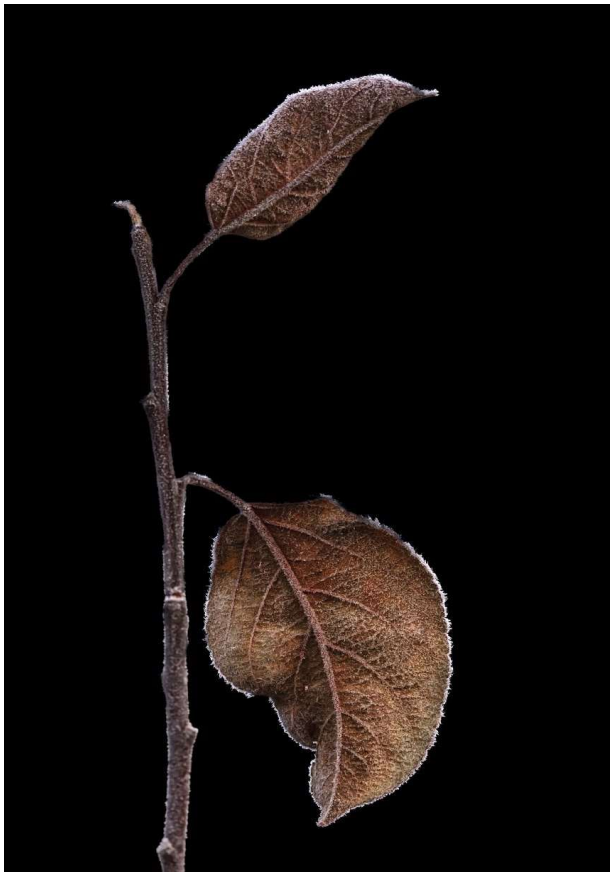

उजमा खान

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

01. शिक्षा हमें विभिन प्रकार का ज्ञान और कौशल को प्रदान करती है ये सीखने की निरंतर, धीमी और सुरक्षित प्रक्रिया है जो हमें ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है ये निरंतर

चलने वाली प्रक्रिया है जो हमारे जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है और हमारे जीवन के साथ ही ख़त्म होती है !

02. कॉलेज एक महाविद्यालय है जहाँ डिग्री प्राप्त होती है कॉलेज एक टाइम पास की जगह नहीं है अगर सही तरीके से हम कॉलेज जाएँ और पढ़ाई पर ध्यान लगाएँ, और कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो कॉलेज को टाइम पास करने की जगह समझते हैं' और कुछ विद्यार्थी पढ़ाई करने आते हैं, और कुछ को ही सफलता प्राप्त होती है!

03. आत्महत्या की बड़ी हुई प्रगति अवसाद की दृष्टि से बीमार और शराब के अत्याधिक सेवन के सामायोजन के बाद भी बनी रहती है,एक से अधिक चिकित्सा स्थिति वाले व्यक्तियों में जोखिम विशेष रूप से ऊंचा था जवान में स्वास्थ्य समस्याओं को आत्महत्या के प्राथमिक उपचार के रूप में सुचिबद्ध किया जाता है !

बली मोहम्मद

एम. ए. प्रथम सेमेस्टर, हिंदी

01. शिक्षा एक माध्यम है जो व्यक्ति को बेहतर बनाने में सहायता करता है। शिक्षा द्वारा समाज में न्याय, समानता, और एकता का विकास होता है। शिक्षा राष्ट्रीय उत्थान के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह देश के व्यक्ति का विकास करता है। शिक्षा मानव समाज के विकास और प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमारे समाज में विवेक, ज्ञान, समझ, और समर्पण की भावना को विकसित करती है। शिक्षा मानवीय सम्पदा को वृद्धि देती है और सभी क्षेत्रों में समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। मानव विकास: शिक्षा मानव विकास की मूलभूत आवश्यकता है।

02. एक कॉलेज एक शैक्षणिक संस्थान या उसका एक घटक हिस्सा है। एक कॉलेज डिग्री प्रदान करने वाला शैक्षणिक संस्थान हो सकता है। अतः कॉलेज का मतलब देश में शिक्षा प्रदान करना ही नहीं बल्कि युवा शक्ति का मजबूत आधार भी है। कॉलेज वह स्थान है जहां कोई अपने करियर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है। कॉलेज वास्तव में हर किसी के लिए आवश्यक है। इस प्रकार एक सफल करियर के लिए छात्र को ज्ञान, आत्मविश्वास, शैक्षणिक और तकनीकी कौशल, करियर के अवसर और सामाजिक कौशल की आवश्यकता होती है। यह कहना उचित नहीं है कि स्कूल-कॉलेज टाईमपास की जगह है।

03. आत्महत्या (जिसका अर्थ है- स्वयं को मारना) जानबूझ कर अपनी मृत्यु का कारण बनने के लिए कार्य करना है। आत्महत्या अक्सर निराशा के चलते की जाती है, आत्माहत्या करने कारण व किसी भी व्यक्ति

का तनाव में होना। जैसे कि शैक्षणिक दबाव: भारत की प्रतिस्पर्द्धी शिक्षा प्रणाली छात्रों पर उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन हेतु अत्यधिक दबाव डालती है। विफलता का डर और माता-पिता की अत्यधिक उम्मीदें छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देने के साथ ही उनमें आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती हैं, जिससे छात्रों को लगता है कि उनके पास कोई रास्ता नहीं बचा है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमी: मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के हालिया प्रयासों के बावजूद अभी भी मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में किफायती मानसिक स्वास्थ्य देखभाल तक सीमित पहुँच है। यह समस्या भारत में मानसिक स्वास्थ्य संकट को बढ़ाती है और आत्महत्याओं में वृद्धि से जुड़ी एक सर्वोपरि चिंता के रूप में उभरती है।

दिव्या

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

01. शिक्षा का इंसान के जीवन में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है। शिक्षा के दौरान ही इंसान अपनी जिंदगी में आगे बढ़ सकता हैं। और वह हर असंभव कार्य कर सकता है जो एक अनपढ़ व्यक्ति नही कर सकता। एक शिक्षित व्यक्ति को हर वो कार्य करने की समझ होती है, जो एक अनपढ़ व्यक्ति की समझ से परे हैं। आज के दौर में शिक्षित व्यक्ति ही अपनी मंजिल को आसानी से पा सकता है। वरना अनपढ़ व्यक्ति तो हजार जगह की ठोकरें खाने के बाद भी संभाल नही पाता है। एक व्यक्ति को अपनी जिंदगी में सफल होने के लिए शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है।

02. आज के समय में लोगों ने स्कूल कालेज को एक टाईम पास की जगह बना लिया हे जहा लोगो को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए वहा लोग अपना टाईम पास करते हैं। परंतु कुछ लोग अब भी कॉलेज में अपनी जिंदगी सवरने या यूँ कहे कि शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और वह आगे चलकर तरक्की भी कर रहे हैं. हमारा तो ये मानना है की कॉलेज कोई टाईम पास या फिर मनोरंजन का स्थान नहीं, बल्कि शिक्षा ग्रहण करने का स्थान है, और हमारा बाकी सभी स्टूडेंट से यही कहना है कि वह अपने शिक्षकों को अपने माता पिता के समान माने और उनकी अवहेलना ना करें। और अपने स्कूल कालेज को टाईम पास का जरिया ना बनाकर अपनी शिक्षा का मंदिर बनाए।

03. आज के दौर में आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं। इसके बहुत से कारण हैं जिसमे बेरोजगारी गरीबी भुखमरी इत्यादि कारण हैं। कुछ लोग तो बेफिजूल की बातों को लेकर भी आत्महत्या कर लेते हैं। आज के दौर मे ऐसा

इसलिए हो रहा है क्योंकि लोगो के पास रोजगार का कोई साधन उपलब्ध नहीं है, और वह अपने परिवार को खान पान की सामग्री उपलब्ध नहीं करा सकते अथवा कमाने का कोई साधन उपलब्ध ना होने के कारण वह आत्महत्या कर लेते हैं। इस बारे में हमारी सलाह यही है की लोगो को अपने कमाने का जरिया ढूंढना चाहिए और अपने परिवार को इस दुख दुविधा में ना डालकर उनका ध्यान रखना चाहिए। अथवा उनके खान पान की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उनके परिवार को कोई तकलीफ न हो।

मन्तशा बी

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

01. शिक्षा की हमारी दृष्टि में बहुत महत्व है। शिक्षा हमें एक आदर्श नागरिक बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा केवल नौकरी का ही नाम नहीं है। आज हम भारतीय शायद इसलिए शिक्षा को महत्व देते हैं क्योंकि शिक्षा पूर्ण कर लेने पर शायद हमें नौकरी मिल जाए किन्तु ज्ञान के लिए शायद कोई पढ़ता है। शिक्षा व्यक्ति के बातचीत से झलकती है। शिक्षा व्यक्ति को अपराध से बचाती है।

02. कॉलेज शिक्षा का स्थान है न कि टाइम पास की जगह। प्रत्येक विषय का अध्यापक कॉलेज में है और जिन बच्चों का लाभ सिर्फ डिग्री हासिल करना है, वे केवल डिग्री हासिल करते हैं और जो छात्र-छात्राएँ डिग्री के साथ शिक्षा भी हासिल करना चाहते हैं, वे शिक्षा हासिल करते हैं। तो ऐसे विद्यार्थियों के लिए कॉलेज शिक्षा का स्थान हैं। दूसरी बात कि सभी छात्र-छात्राएँ समान नहीं होते। सबकी नजर व नजरिया अलग-अलग होता है, इसलिए कुछ के लिए कॉलेज शिक्षा का स्थान है तो कुछ के लिए टाइम पास की जगह।

03. आजकल आत्महत्या की प्रवृत्ति इस प्रकार आम होती जा रही है जैसे भारत की जनसंख्या वृद्धि। इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं, जिनमें कुछ पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँगी। आत्महत्या अधिकतर नौजवान कर रहे हैं। नौकरी न मिल पाने के कारण व्यक्ति यह गुनाह कर बैठता है। घरेलू हिंसा या कोई भी छोटा-मोटा कारण जिसे बढ़ा-चढ़ाकर उस व्यक्ति को दिमागी रोगी बना देता है। कोई भी पाप आत्महत्या से बड़ा नहीं होता। इसको रोकने के लिए यह देखना होगा कि यदि हमारे घर में कोई व्यक्ति ज्यादा बोलता है और अचानक शांत रहना शुरू कर दे तो उससे बातें करनी चाहिए। उसकी समस्याओं को समझना चाहिए।

तन्नू

बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर

01. शिक्षा मनुष्य को असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, और स्वयं की वास्तविकता की ओर ले जाती है। शिक्षा का

अर्थ ज्ञान लेना ही नहीं, बल्कि उसका सही उपयोग भी है।

02. यह पूरी तरह विद्यार्थी पर निर्भर करता है कि वह किस उद्देश्य से कॉलेज आ रहा है। परिश्रमी अनुशासित और जिज्ञासु के लिए तो वह अवश्य ही शिक्षा का स्थान है।

03. आज के समय में आत्महत्या का कारण व्यक्ति का अपने जीवन को दूसरो के जीवन से तुलना करना और जीवन की और स्वयं की समझ न होना है। आजकल समाज में अलगाव आने की प्रमुख वजह सोशल मीडिया है।

आदर्श कुमार

एम. ए. तृतीय सेमेस्टर, समाजशास्त्र

01. सभी माता पिता अपने बच्चों को सफलता की ओर जाते हुए देखना चाहते हैं, जो केवल अच्छी और उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। जीवन में सफलता प्राप्त करने और कुछ अलग करने के लिए शिक्षा सभी के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षण प्रक्रिया के दौरान हमें प्राप्त हुआ ज्ञान हम सभी को अपने जीवन में आत्मनिर्भर बनाता है।

02. कॉलेज पढ़ने लिखने का पवित्र स्थान है। अतः आनंद के साथ नए विषय पर ध्यान देना चाहिए। यदि यहाँ पढ़ने की अपेक्षा टाइमपास के लिए आएंगे तो जिंदगी एक दिन टाइमपास हो जाएगी।

03. वर्तमान में भागदौड़ भरी जिंदगी में अक्सर लोग मानसिक तनाव में रहते हैं। तनाव की वजह से आत्महत्या करने की घटनाएं बढ़ रही हैं। कोई पारिवारिक कलह को लेकर तो कोई व्यवसाय को लेकर तनाव में है। ऐसी स्थिति में लोग जिदगी को दांव पर लगा रहे हैं। मनोचिकित्सक डा. शशिकांत यादव के अनुसार आत्महत्या की बढ़ रही प्रवृत्ति समाज के लिए चिताजनक है। आत्म हत्या की गंभीरता के बारे में जागरूक करने के लिए वर्ष 2003 से हर साल 10 सितंबर को सुसाइड प्रिवेंशन डे के रूप में मनाया जाता है। ग्लोबल बर्डन आफ डिजीज स्टडी 1990-2016 के अनुसार देश में 15 से 39 साल के लोगों में मृत्यु का मुख्य कारण आत्महत्या है। कहा कि आत्महत्या को रोकने के लिए हम सबके निरंतर सहयोग की आवश्यकता है। जब भी हमें अपने आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति दिखे जो खुद को नुकसान पहुँचाने की बात करता हो, उसकी बातों को हल्के में न लें। उससे बात करें काउंसलर से संपर्क करें। हो सकता है हमारे प्रयास से किसी को खुशी मिले जीने की उम्मीद जाग जाए।

[आदर्श कुमार, वर्तमान में छात्रसंघ सचिव हैं।]

डॉ. कैलाश उनियाल

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग

01. मेरी दृष्टि में शिक्षा की महत्ता यह है कि इससे हमारी सोच और दृष्टिकोण में परिवर्तित होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात कि हमें स्वतंत्रता की भावना प्राप्त होती है, और समाज में हमें उच्चतम मान्यता की प्राप्ति होती है।

02. वर्तमान के कॉलेज पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के केंद्र है एवं न पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए टाइम पास की जगह भी है।

03. इन दोनों आत्महत्या की प्रवृत्ति इसलिए बढ़ रही है क्योंकि आजकल के युवा प्यार के प्रेमजाल में फंसकर अंधकार में ही रहे हैं और आगे जाकर समाज में उनके लिए अपने कैरियर बनाने के लिए जगह नहीं है, इसलिए असफल प्यार प्रेम में या धोखा खाने के बाद एवं बेरोजगारी के कारण आत्महत्या कर लेते हैं।

दीपक कुमार चौधरी

एम. ए. तृतीय सेमेस्टर, समाजशास्त्र

01. शिक्षा का महत्व है मस्तिष्क का विकास होना शिक्षा को ग्रहण करके उच्च अधिकारी बन्ना अच्छी नौकरी पाना अपने देश का समाज का नाम रोशन करना।।

02. सबकी अपनी-अपनी सोच है कोई यहां पढ़ने आता है तो कोई टाइम पास करना लेकिन यह शिक्षा का मंदिर है। हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए ना कि हमें टाइम पास करना चाहिए।

03. इन दोनों आत्महत्या इसलिए बढ़ रही है क्योंकि विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहा है परंतु उसे रोजगार नहीं मिल पा रहा है, जिससे बढ़ती महंगाई में अपना घर नहीं चला पा रहा है। इस वजह से भी कुछ विद्यार्थी आत्महत्या कर रहे हैं और कुछ विद्यार्थी कक्षा में फेल हो जाते हैं। कई कारणों में इन कारणों से भी विद्यार्थी आत्महत्या कर लेते हैं।

[दीपक कुमार चौधरी, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष हैं।]

डॉ. योगेश पांडे

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भौतिक विज्ञान विभाग

01. शिक्षा मेरे नजरिए में जीवन को समर्थन करने वाला एक महत्वपूर्ण साधन है। यह न केवल ज्ञान देती है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में भी मदद करती है।

02. वर्तमान में कॉलेज शिक्षा सिर्फ ज्ञान प्राप्त कराने के लिए ही नहीं, बल्कि कौशल, सोचने की क्षमता, और कैरियर तैयारी में सहायक है। यह व्यक्तिगत और पेशेवर विकास का केंद्र है।

3. आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है क्योंकि लोग सामाजिक दूरी, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, और जीवन के तनाव के कारण आत्मनिर्भरता और समर्थन की कमी महसूस कर रहे हैं।

कु. संतोष

एम. ए. प्रथम सेमेस्टर, हिंदी

01. शिक्षा मनुष्य के भीतर अच्छे विचारों का निर्माण करती है, मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। बेहतर समाज के निर्माण में सुरक्षित नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इनसानों में सोचने की शक्ति होती है इसलिए वो सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है लेकिन अशिक्षित मनुष्य की सोच पशु के समान होती है।

02. एक कॉलेज एक शैक्षणिक संस्थान या उसका एक घटक हिस्सा है। एक कॉलेज डिग्री प्रदान करने वाला शैक्षणिक संस्थान हो सकता है। अतः कॉलेज का मतलब देश में शिक्षा प्रदान करना ही नहीं बल्कि युवा शक्ति का मजबूत आधार भी है। कॉलेज वह स्थान है जहाँ कोई अपने कैरियर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है। कॉलेज वास्तव में हर किसी के लिए आवश्यक है। इस प्रकार एक सफल कैरियर के लिए छात्र को ज्ञान, आत्मविश्वास, शैक्षणिक और तकनीकी कौशल, कैरियर के अवसर और सामाजिक कौशल की आवश्यकता होती है। यह कहना उचित नहीं है कि स्कूल कॉलेज टाइमपास की जगह है।

03. आत्महत्या की प्रवृत्ति अवसादग्रस्त की बीमारी, शराब के अत्यधिक सेवन और अन्य कई कारकों के समायोजन के बाद बनती है। आत्महत्या में तभी कम होगी जब मेलजोल बढ़ेगा।

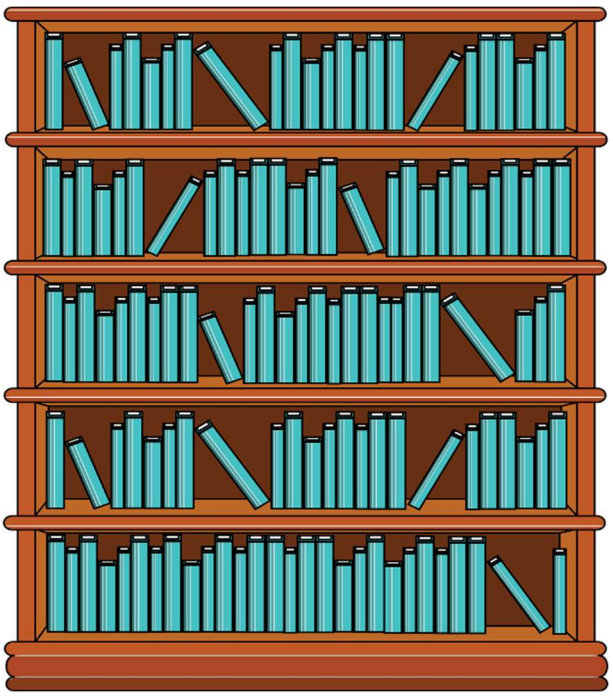

सपना

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

01. शिक्षा मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् व्यक्ति अपनी सभी समस्याओं का सामना करने में सक्षम हो जाता है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति का जीवन विकास की ओर अग्रसर होता है तथा सदाचार का जीवन प्राप्त कर समाज में अहम भूमिका का निर्वहन करता है। एक प्रकार से शिक्षा द्वारा व्यक्ति का जीवन निरंतर विकसित होता जाता है तथा वह सामाजिक, शारीरिक और मानसिक रूप से पुष्ट होता है। कुल मिलाकर मुझे लगता है कि शिक्षा की महत्ता इसलिए भी है कि यह हमें संघर्ष करना सिखाती है।

02. व्यक्ति की सोच एक प्रवृत्ति है, जो किसी भी मार्ग पर चली जाती है। इसी प्रकार कॉलेज में पढ़ाई के समय पढ़ना तथा खेल के समय खेलना दोनों ही आवश्यक है, अतः जो भी कॉलेज में शिक्षा ग्रहण के समय पर उपस्थित होता है, वह अपनी शिक्षा प्रवृत्ति को मजबूत बनाता है। आज के दौर में कॉलेज में सभी प्रकार के छात्र-छात्रा हैं। पढ़ने वाले तथा समय बर्बाद करने वाले भी। इसलिए कॉलेज सभी के लिए अलग-अलग भूमिका रखता है किंतु पढ़ाई के समय पढ़ना आवश्यक है क्योंकि जो समय पर सर या मैम द्वारा बताया जाता है, वह बाद में आपको कोई भी नहीं समझा सकता।

03. जब मनुष्य किसी कष्ट में होता है तो उसके मस्तिष्क में अनेक नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं ये विचार या तो समाज के कारण या परिवार अथवा निजी समस्या के कारण से उत्पन्न हो जाते हैं अतः मनुष्य अपने मस्तिष्क को विपरीत दिशा में ले जाता है वह सोचता है कि वह हार गया, तो वह अपने जीवन को समाप्त करने का प्रयत्न करता है, अर्थात वह प्राणों को त्यागने का निर्णय लेता है, किंतु समस्या केवल जीवन का अंत करना नहीं होता, अपितु समस्या का समाधान करना भी जरूरी है, अतः समस्या का समाधान करें, अपने जीवन को नई दिशा दें, जिंदगी का नया लक्ष्य बनाएँ।

हमें यदि कोई कार्य सही लगता है, तो परिवार, समाज के बारे में न सोचकर अपनी जीवन की दिशा को आगे का मार्ग दिखाना चाहिए, थोड़ी मुश्किले भी आती हैं पर समय एक समान नहीं रहता है समय बदलता रहता है, जीवन को नई दिशा दें और जिंदगी का नया लक्ष्य बनाएं तभी जीवन सुखद होता है।

संध्या सागर

बी. कॉम. तृतीय सेमेस्टर

01. शिक्षा हमे विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा और कौशल से हमें आत्मविश्वास मिलता है, शिक्षा हम सभी के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और शिक्षा जीवन से नहीं बल्कि शिक्षा से जीवन है।

02. वर्तमान समय में कॉलेज को आज की युवा पीढ़ी ने टाइम पास की जगह समझ रखा है क्योंकि कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवाओं का, बेरोजगार होना यह मुख्य कारण बन गया है, और अगर शिक्षा का अगर महत्त्व है तो केवल आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति ही सच्ची शिक्षा है।

03. आज के समय मे आत्महत्या ज्यादातर युवावस्था के उम्र के व्यक्तियों द्वारा होती है, जिन के सपने पूरे न होने पर कोई रास्ता नजर नहीं आता और, वे हर तरीके से निराशा का सामना करते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्तियों में मनोबल टूट जाने और आत्मविश्वास न रह जाने के कारण आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

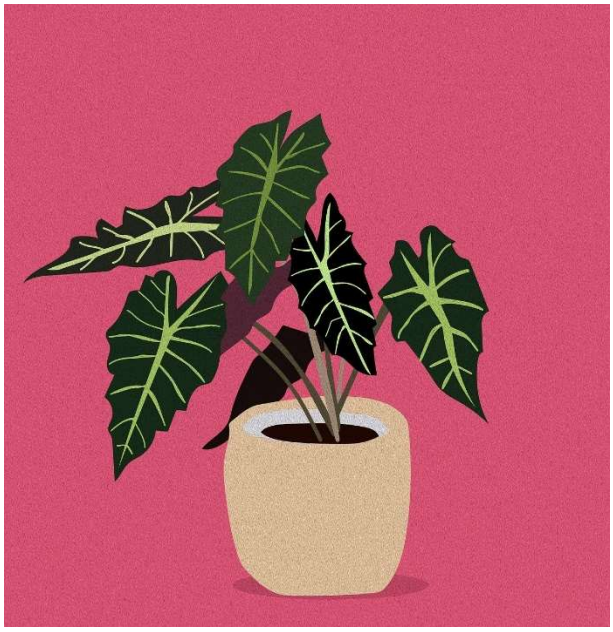

सताक्षी शर्मा

बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर

01. शिक्षा हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। शिक्षा एक इनसान को वास्तविक रूप में मनुष्य बनाती है। जो, बुद्धि, दया, संवेदना, क्षमाशीलता आदि गुणों से परिपूर्ण होता है। एक अनपढ में ये गुण होते है लेकिन शिक्षा उन गुणों को वास्तविक रूप प्रदान करती है। पैसा कमाना, घर बनाना, पालन-पोषण तो अनपढ को लक्ष्य भी कर सकता है, लेकिन जीवन देकर जीवन को सार्थक बनाने का काम शिक्षा ही करती है। शिक्षा जीवन को एक नया रूप देती है। शिक्षा हमें न कि व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग और कर्तव्यनिष्ठ करती है।

दूसरी तरफ अगर हम धार्मिक दृष्टि से देखें तो भी शिक्षा हर समाज का और समाज के प्रत्येक में वर्ग के लिए उपयोगी व महत्वपूर्ण है। उचित शिक्षा हमें आचरण करना सिखाती है, आदर, औपचारिक, अनौपचारिक व्यवहार करना हम शिक्षा ग्रहण करने पर ही सीखते है। इसलिए हमारे पुराणों में कहा गया है कि ज्ञान विनम्रता देता है, और विनम्रता योग्यता लेती है। धन पात्रता से प्राप्त होता है और धन से धर्म और उसके बाद सुख प्राप्त होता है। अर्थात विद्या से विनय देती है, विनय से योग्यता आती है, योग्यता से धन धन से ही धर्म होता है, और धर्म से ही सुख प्राप्त होता है।

02. वर्तमान में कॉलेज शिक्षा का स्थान है या टाइम पास का ? इसका जवाब तो यही हो सकता है कि जो कॉलेज पढ़ने के इरादे से जाते हैं, उनके लिए तो शिक्षा का ही स्थान है। इसमें कोई दो राय नहीं है। और वही ज्यादातर

छात्र टाइमपास के लिए ही आते हैं, तो उनके लिए टाइमपास की जगह है। हालांकि इसमें सबकी अपनी-अपनी राय है। हम तो कॉलेज पढ़ने के विचार लिए आते हैं क्योंकि शिक्षा का महत्व समझते आते हैं। बाकी कई तो सिर्फ घूमने ही आते हैं।

03. अगर हम आजकल अपने समाज में देखें तो रोज आत्महत्या के मामले सुनने को मिलते ही हैं। लोग इसे नजर अंदाज करते हैं क्योंकि ये घटना अभी उनके परिवार या करीबी के साथ नहीं हुई। देखा जाए तो बहुत गंभीर मुद्दा है। हमें इसपर ध्यान देने की आवश्यकता है। आत्महत्या के इन मामलों में सबसे आत्महत्याएँ आज कल का युवावर्ग ही कर रहा है। आज कल हम अपने बच्चों को बचपन से हो ये सिखा देते हैं, कि हारना बुरी बात है। हार जाओगे तो कुछ नहीं मिलेगा, सब खत्म। इसलिए बड़े होकर ये बच्चे हारने से घबराते हैं। वे स्वयं को हारता हुआ नहीं देख पाते। और नासमझी में ऐसा कदम उठा लेते हैं।

आजकल माँ-बाप अपने बच्चों पर अपनी आकांक्षाओं का इतना भार रख देतें हैं कि बच्चा समझ ही नहीं पाता उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। आज का युवा वर्ग डिप्रेशन का शिकार होता जा रहा हैं, कहीं उसे पढ़ाई की चिंता है। कहीं नौकरी नहीं मिल रही, कहीं परिवार, और कहीं कुछ और। आज का युवा वर्ग बहुत जल्दी निराश हो जाता है। वह दो मिनट वाली मैगी की तरह ही सफलता और सबकुछ अब पा लेना चाहता है। अब दो मिनट वाली मैगी में भी स्वाद नहीं होता, और न वह तसल्ली, जो तसल्ली और स्वाद से पकाई गई मैगी में होता है। ये तो फिर भी हमारा जीवन है।

डॉ. संजय सिंह बिष्ट
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भौतिक विज्ञान विभाग

01. जैसा की स्वामी विवेकानंद ने कहा है "व्यक्ति में अन्तर्निहित पूर्णता को उजागर करना ही शिक्षा है।" वर्तमान समय में जब समस्त संसार सूचना तकनीकी के दौर से गुजर रहा है ऐसे में उचित एवं अनुचित के बारे में समझ होना बहुत जरुरी है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति में आत्मिविश्वास पैदा करे, उसे आत्मनिर्भर बनाए तथा उसे जीविकोपार्जन के काबिल बनाए। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा औजार है जिसके द्वारा मात्र जीवन व्यतीत करना ही उद्देश्य न होकर सपने देखना और उसे पूरा करना संभव है।

02. वस्तुतः कॉलेज शिक्षा के ही स्थान हैं परन्तु वर्तमान समय में शिक्षकों और छात्रों की ऐसी उदासीनता देखने में आती है कि कॉलेज टाइम पास की जगहें ही मालूम पड़ती है, लेकिन सभी संस्थानों को एक ही तराजू में तोलना भी सही नहीं होगा।

03. इन दिनों आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है हालाँकि इसका कोई पुख्ता प्रमाण मेरे पास

नहीं है लेकिन मैं सोचता हूँ कि अति संवेदनशील व्यक्ति ही ऐसा कदम उठता है इसके अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे कि सामाजिक दबाव, निराशाभरा जीवन, उम्मीदों का टूटना, अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरना आदि। वर्तमान समय में जब व्यक्ति सोशल मीडिया में इतना समय ब्यतीत कर रहा है की वह उसी जीवन को सच मानने लग जाता है और हीनभावना से ग्रस्त हो जाता है उसका आस-पड़ोस से सामाजिक सम्बन्ध कट गया है। हीनभावना स ग्रसित ऐसा ब्यक्ति जब कोई सहारा नहीं पाता तो आत्मघाती कदम उठा लेता है।

डॉ. अतीश वर्मा

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, वाणिज्य विभाग

01. आपके पहले प्रश्न के उत्तर में बस इतना कहना चाहता हूँ कि शिक्षा के बिना व्यक्ति, समाज या देश एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। इसके बिना न व्यक्ति का अस्तित्व है, न देश का, और न समाज का। कहने का अर्थ है कि शिक्षा की महत्ता के कारण ही व्यक्ति या अन्य संस्थाओं की महत्ता भी है। ये हमें अपने मानवीय लक्ष्य की ओर उन्मुख करने का कार्य करती है। एक तरह से ये हमारी आँखों को खोलने का कार्य करती है। अब ये भी अलग बात है कि कोई व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी अपनी आँखें बंद रखता है। ऐसे व्यक्तियों का कोई इलाज नहीं इस धरती पर।

02. देखिए, एक कॉलेज अपने आप में एक समाज होता है, जहाँ केवल नई और नई चीजों का वास है। यहाँ एक ही समय में कई प्रकार की घटनाएँ भी घट सकती हैं, और घटती भी हैं। एक प्रकार से नकारात्मक शक्ति भी और सकारात्मक शक्ति भी। अतः यहाँ आकर कोई अपनी उर्जा टाइमपास में लगाता है, तो कोई शिक्षा ग्रहणकर देश, समाज और स्वयं को आगे बढ़ाने में।

03. आत्महत्या करने के कई कारण हैं। ये बहुत ही गंभीर मुद्दा है। मैं इसका एकबड़ा कारण सामाजिक अलगाव मानता हूँ। तो दूसरा बड़ा कारण शिक्षा को, जो हममें जीवन जीने और संघर्ष का रास्ता अपनाना सिखा सकने में अक्षम प्रमाणित हो रही है। आपने मुझे बात कहने का अवसर दिया, और इस परिचर्चा का हिस्सा बनाया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

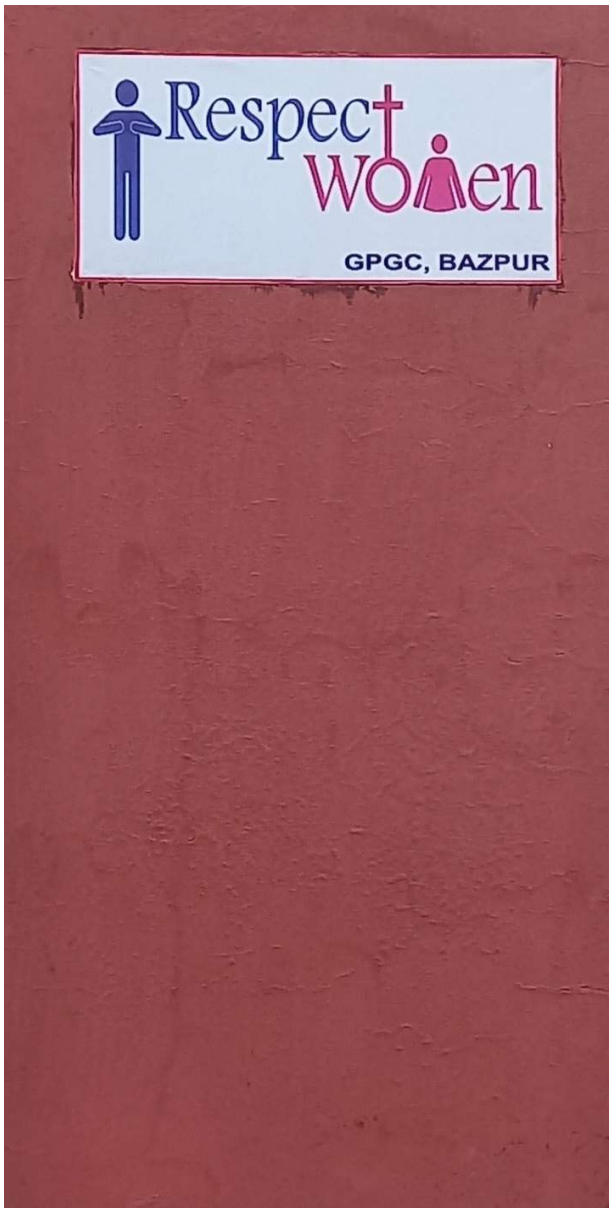

प्रस्तुति : छात्र संपादक

मेरी आपबीती...

निकिता
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

इतिहास गवाह है कि बीते हुए वर्षों में स्त्रियों को शिक्षा की दशा कितनी खराब थी। हालांकि आज स्त्रियों की शिक्षा को लेकर समाज में जागरूकता आई है लेकिन एक हद तक ही। आज भी स्त्रियों को ज्यादा पढ़ना-लिखना पुरानी परंपराओं का उल्लंघन माना जाता है। कई परिवार आज भी लड़कियों को पढ़ने और उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए कोई ज्यादा प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। हालांकि शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएँ आगे आई हैं लेकिन उतना आगे नहीं आई हैं जितना कि आना चाहिए था।

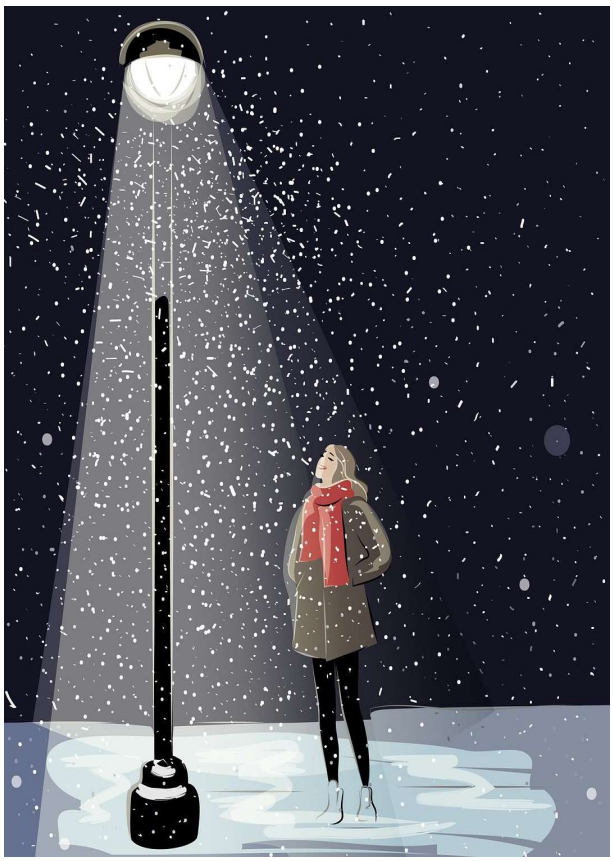

अब बात मेरे विषय में। मेरा नाम निकिता है और यह गर्व की बात है कि जब मैं इस दुनिया में आई, और मैंने अपना होश संभाला। तब मेरे लिए परिवार और सबसे ज्यादा मेरी माँ ने मुझे पढ़ने के लिए प्रयत्न किया। मैं बताना चाहती हूँ कि मेरी प्रेरणा स्रोत मेरी माँ रही है जिसने मुझे हमेशा से ही सही गलत और अच्छी बातें सिखाई हर किसी की जिंदगी में कोई ना कोई होता है जिससे वह प्रेरणा लेता है मेरी जिंदगी में वह शख्स मेरी मां है। उनकी सिखाई हुई अच्छी बातों के साथ मैं बड़ी हुई और मैं इस लायक हुई कि मैं सही-गलत का भेद समझ सकूं।

मैं पढ़ने में अच्छी थी, तो अतः हर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने लगी। कक्षा सात में मेरे सबसे पसंदीदा शिक्षक हिंदी विषय के अध्यापक रवींद्र सर थे, जिन्होंने मुझे बताया कि जिंदगी में कभी भी किसी के चेहरे पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि अकसर लोग चेहरा समय देखकर बदल देते हैं। वह बात मैं हमेशा याद रखती थी, लेकिन एक बार में उनकी यह बातें भूल गई और मेरी ही एक दोस्त जिस पर मैं आँखें बंद करके भरोसा करती थी, उसने ही मुझे एहसास करा दिया कि लोगों के चेहरे पर भरोसा करना कितना गलत हो सकता है। धीरे-धीरे मैं हर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने लगी और इस तरह मैं ग्यारहवीं कक्षा में पहुँच गई। यह एक ऐसी कक्षा थी जिसमें मैंने पहली बार कक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त किया। पूरी कक्षा में तीसरे स्थान पर आने पर मुझे बहुत बुरा लगा। मुझे लगा कि मुझे और अधिक श्रम करना चाहिए।

23 जनवरी 2022 को मैंने अपनी बड़ी दीदी को हमेशा के लिए खो दिया, जिस कारण मैं और मेरा परिवार काफी हद तक परेशान रहने लगे। मेरे पढ़ने की क्षमता में भी कमी आने लगी और मैं ग्यारहवीं कक्षा में तीसरे स्थान पर आई, तभी मैंने तय किया कि मेरी दीदी के लिए मेरा प्यार मेरी ताकत होना चाहिए ना कि मेरी कमजोरी; और मैं फिर से पढ़ाई पर

ध्यान देना शुरू किया और बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की। यह देखकर मेरे घर वालों ने मुझे आगे पढ़ाने का निर्णय लिया, जिसके कारण मैं आज महाविद्यालय की छात्रा हूँ। हालांकि जब मेरे माता-पिता ने मुझे आगे पढ़ने का फैसला किया तो लोगों ने कहा कि आगे पढ़ने से क्या होगा? करना तो इसे चूल्हा-चौका ही है। तब मेरी मेरे पापा ने उन लोगों को जवाब दिया कि मेरी बेटी अगर पढ़ना चाहती है और जीवन में कुछ बनना चाहती है तो मैं और तुम लोग कौन होते हैं उसके सपनों के बीच आने वाले?

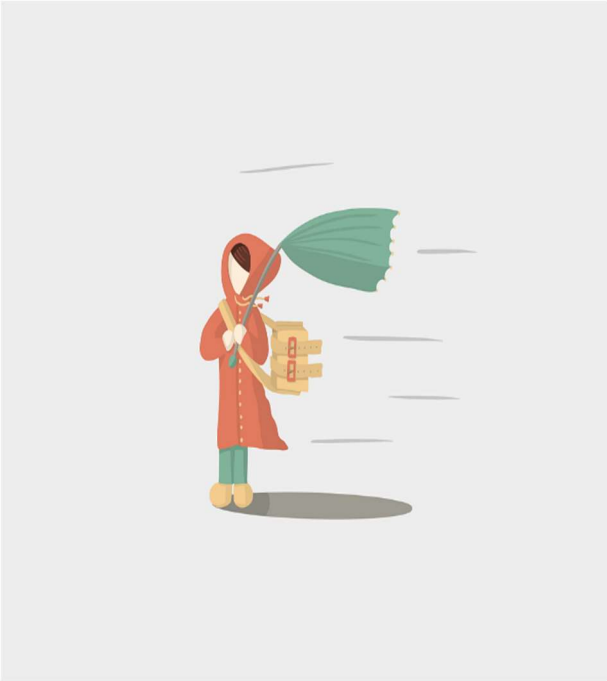

तब मैंने तय किया कि जिंदगी में मैं पढ़-लिखकर कुछ बनकर ही दिखाऊंगी तथा उन लोगों का मुँह बंद करूंगी जो लड़कियों को केवल घर में चूल्हा चौका करने वाली समझते हैं हालांकि मेरी इस शिक्षा यात्रा में काफी कठिनाइयों को सामना किया लेकिन मेरे पापा ने मुझे सिखाया है कि कठिनाइयाँ हर किसी के रास्ते में आती है अतः कठिनाइयों को देखकर रास्ता नहीं बदलना चाहिए बल्कि कठिनाइयों को सामना करना चाहिए। मैंने यही किया भी जिसका परिणाम है कि मैं आज महाविद्यालय की छात्रा हूँ। किसी ने सच कहा है ना की मंजिल मिले या ना मिले यह तो नसीब की बात है, लेकिन हम कोशिश भी न करें यह और गलत बात है। तो बस इसलिए मैंने जिंदगी में हर मुसीबत को हँसकर सामना करना सीख लिया है।

तो दोस्तों, अभी तो बस यहीं तक मेरी शिक्षा यात्रा है। आगे जो होगा, उसकी आपबीती फिर कभी। यह कहते हुए कि-

शिक्षा है एक ऐसा सोना,
जिसे तुम कभी भी ना खोना।

00

बधाई

हिंदी के वरिष्ठ कथाकार संजीव को वर्ष 2023 का साहित्य अकादमी पुरस्कार, उनके उपन्यास 'मुझे पहचानो' के लिए मिला है। 'समावेश' टीम और महाविद्यालय परिवार की ओर से उन्हें बधाई।

- छात्र संपादक

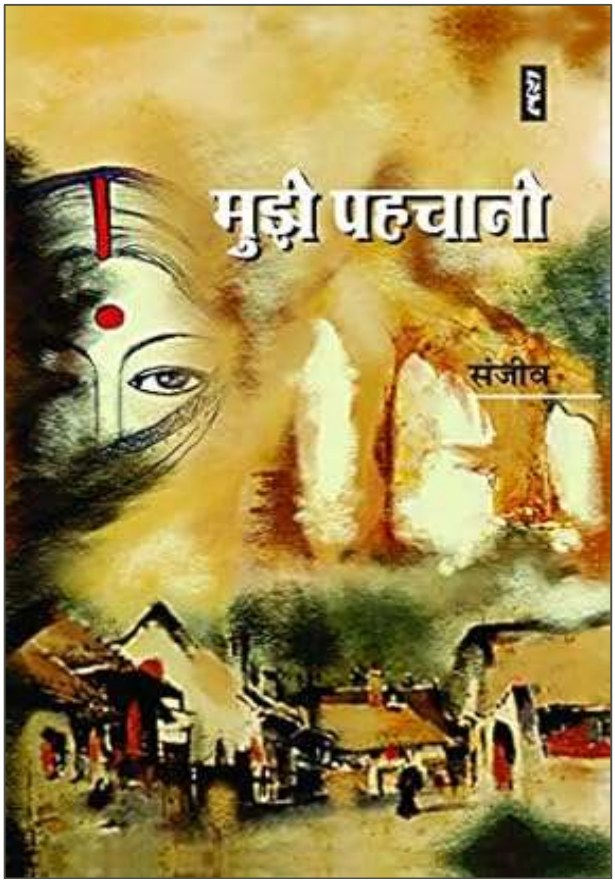

कविता

जानवर बनाता है ये संसार

सपना

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

01.
मैं नन्हीं सी परी आसमान से आ गिरी
नफरत की इस दुनिया में खुशियाँ लाने
पता नहीं लोग मुझसे क्यों घबराते।

02.
मैं नहीं जाति जानती हूँ नहीं धर्म
न मैं अच्छाई जानती हूँ ना बुराई
पता नहीं मुझे क्यों भटकाते हैं लोग।

03.
घर संसार कितना कुछ सिखाता है
कोई अच्छाई सिखाता है तो कोई बुराई
कोई सच बोलना सिखाता है
तो कोई झूठ
इनसान से मुझे जानवर बनाता है
ये संसार।

04.
कोई पढ़ाता है
कोई पढ़ाई को गलत बताता है
मैं लड़की हूँ
बस यही बार-बार समाज मुझे जताता है।

05.
कोई शादी के बहाने खरीदना है
तो कोई बेचता है
मैं क्या चाहती हूँ
यह कोई नहीं सोचता है।

06.
दहेज देकर लालच बढ़ाते हैं
कहते हैं लड़की होने का फर्ज निभाते हैं
लालच बढ़ता है तो मारते हैं
दहेज और काम है यही वजह बताते हैं।

07.
खाना मैं बनाती हूँ सबको प्यार से खिलाती हूँ
खुद बाद में खाती हूँ
एक-एक दाने पर ताना कटाक्ष मिलता है
मैं बोझ हूँ घर में
यही सब हँसते हुए सह जाती हूँ।

08.
हँसती हूँ सबका ख्याल रखती हूँ
कोई दुखी हो तो उसके साथ रहती हूँ
हर परेशानी को हटाती हूँ
अपना दुख सबसे छुपाती हूँ
मैं लड़की हूँ-
मैं भी जीना चाहती हूँ
बस ये ही बात दुनिया को बताना चाहती हूँ।

कहानी_

पता गलत है

साभार : परिकथा, जनवरी-फरवरी 2018

डॉ. खेमकरण 'सोमन', हिंदी विभाग

दिनांक: 30 मई, सोमवार

हैल्लो अनुपमा जी!

मैंने आज के अखबार में आपके बारे में पढ़ा। आपकी रूचियों के बारे में पढ़ा। इससे पहले मैं भी इसी पेज पर छपा हूँ। शायद आपने देखा होगा। उसके बाद भी कोई बहुत अच्छा फ्रेण्ड नहीं है मेरा। आपको 'हैल्लो यंग' पेज पर देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मन किया कि मैं आपसे दोस्ती करूँ। इसलिए मैं अपना बायो-डाटा भेज रहा हूँ। आपको अजीब लगेगा लेकिन कोई बात नहीं। इसमें मेरे बारे में सब कुछ लिखा हुआ है। ए टू जेड। कुछ बातें ऐसी भी हैं जो मेरे मम्मी-पापा भी नहीं जानते। प्लीज...मेरी दोस्ती स्वीकार कर लेना। आपको पत्र लिखकर आज मैं बहुत खुश हूँ। शुभकामनाओं के साथ-

आापका दोस्त,

आकाश

दिनांकः 28 जून, मंगलवार

हैल्लो अनुपमा जी,

पहले तो मैं खुश हुआ कि मेरा कोई पत्र आया है ! लेकिन लिफाफा खोलकर देखा तो उसमें मेरा ही पत्र निकला। लिफाफे के ऊपर लिखा हुआ था पता गलत है। जबकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ, आपका पता बिलकुल सही है। लिफाफा देखकर लगता है कि आपने इसे खोलकर भी पढ़ा है।

अनुपमा जी, अब यह न समझिएगा कि मैं आपसे नाराज हो गया हूँ। आपने मेरी दोस्ती स्वीकार नहीं की है तो इसका कारण भी अच्छी तरह जानता हूँ। आप लड़की हैं, मैं लड़का हूँ। और हम दोनों ही अजनबी हैं। इसलिए यकाएक दोस्ती भी नहीं होनी चाहिए। कुछ जाँच-परख भी तो आवश्यक है। इस कारण आपकी शंका-आशंका मैं भलीभांति जान रहा हूँ तथा एक पत्र अब और भेजने की गुस्ताखी कर रहा हूँ ताकि आप मेरी दोस्ती स्वीकार कर लें। इसी के साथ मैं अपना पेन कार्ड-वोटर आई.डी. की जेरोक्स कॉपी भी भेज रहा हूँ। जिसे देखकर आप जान-समझ सकें कि मैं एक सही लड़का हूँ। प्लीज अनुपमा जी प्लीज... अब पत्र वापिस मत भेजिएगा।

आई होप कि... आप अच्छी होंगी।

आापका दोस्त,

आकाश

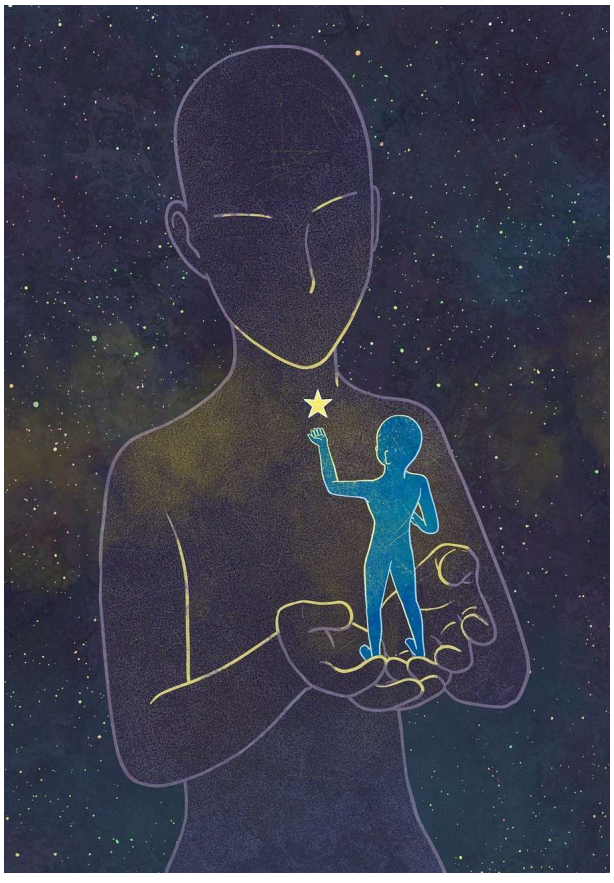

दिनांकः 20 जुलाई, बुद्धवार

हैल्लो अनुपमा जी!

आपने फिर वही, 30 मई के पत्र की तरह, 28 जून को लिखे गए पत्र को भी बहुत बेरहमी के साथ वापिस कर दिया! वही, पुरानी बात लिखकर कि पता गलत है! जबकि पत्र को देखकर, साफ-साफ पता चल रहा है कि आपने इस बार भी इसे पढ़ा है! लिफाफा उस तरह चिपका नहीं हैं, जिस तरह मैं चिपकाकर भेजता हूँ। लिफाफे को देखकर कोई भी ये बातें कह सकता है!

सच! मैं अपने कमरे में आज बहुत रोया। आज मेरा जन्मदिन भी है। मुझे पूरा विश्वास था कि आप जन्मदिन की शुभकामनाएँ देंगी। हो सकता है कुछ गिफ्ट भी भेजें। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। रियली... आज मैं बहुत अपसेट था। मम्मी-पापा जी भी कह रहे थे कि बेटा एनी प्रोब्लम! अब उन्हें क्या बताता ? बस चुप ही रहा। अब रात 11 बजे आपको पत्र लिख रहा हूँ।

अनुपमा जी, मैं बहुत सी लड़कियों को जानता हूँ लेकिन, मैंने कभी किसी से कोई अपशब्द नहीं कहा। कभी किसी से कोई बद्तमीजी नहीं की। मैं माँ-बहनों की इज्जत करने वाला बहुत ही अच्छा लड़का हूँ। मेरे अच्छे माता-पिता को मुझसे बहुत अपेक्षा है कि मैं इस दुनिया के लिए कुछ बेहतर करूँ। सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करूँ। मेरी छोटी बहन संजना इस दुनिया में मेरी सबसे अच्छी दोस्त है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि मेरी सबसे अच्छी दोस्त आप बनें। प्लीज!

अनुपमा जी, आपसे दोस्ती करने के पीछे भी कुछ ठोस वजह है। मैंने जब से आपकी फोटो देखी है, तब से मेरे मन-मस्तिष्क पर आप छा गई हो। यकीन कीजिए, आप बेहद खूबसूरत हैं। शायद, मुझे आपसे प्यार भी हो गया है। मैंने आपको फेसबुक पर खोजने की बहुत कोशिश की परन्तु आप नहीं मिली। मैंने ट्विटर पर भी आपको बहुत खोजा लेकिन... यहाँ भी असफल रहा। गूगल ने भी मेरी मदद नहीं की। मैं अब क्या करूँ? मेरे पास आपका फोन नम्बर भी नहीं है। ले-देकर अखबार वाली फोटो ही बची है। इन दिनों मैं आपको लेकर बहुत बेचैन रहने लगा हूँ। पता नहीं किस स्थिति में होंगी आप?

प्लीज इस बार मेरा पत्र वापिस नहीं भेजिएगा। प्लीज, मैं हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ। प्लीज... कुछ तो लिखकर भेजिए। हो सके तो अपना नया फोटो भेजिएगा। मोबाइल नम्बर भी और खासकर अपना व्हाट्सऐप नम्बर तो जरूर।

घर में सभी सदस्यों को मेरा प्रणाम कहिएगा।

आापका दोस्त,

आकाश

दिनांकः 25 अगस्त, बृहस्पतिवार

हैल्लो अनुपमा जी!

आपको पत्र भेजे आज पैंतीस-छत्तीस दिन हो गए हैं। आपने मुझे उत्तर नहीं दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझे पत्र जरूर लिखोगी। क्योंकि इस दुनिया में मेरी सबसे अच्छी दोस्त आप हो। सिर्फ आप!

पता है आपको! आज संजना ने वो सारे पत्र पढ़ लिए जो मैंने आपको लिखे थे, जिसे आपने वापिस कर दिया था। वह बोली भैया आपको कुछ-कुछ प्यार हो गया है। उसने अपनी सहेलियों को भी बता दिया। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने उसे एक जोर का तमाचा मार दिया। शायद अपने जीवन में पहली बार मारा होगा। उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि उसका भाई ऐसा भी कर सकता है।

अनुपमा जी, मैं नहीं चाहता कि मेरे और आपके बीच में कोई दूसरा आए। सच कह रहा हूँ, इन दिनों मेरा मन किसी भी काम में नहीं लग रहा है। आपके पत्र के इन्तजार में,

आपका दोस्त,
आकाश

दिनांकः 23 सितंबर, शुक्रवार

हैल्लो अनुपमा जी,

आपने फिर मेरे दोनों पत्रों को अलग-अलग दो बड़े लिफाफों में रखकर वापिस भेज दिया है। लिफाफे के ऊपर आपने फिर लिखा है-पता गलत है। अगर पता गलत है तो पत्रों को जैसे मैंने भेजा है, ठीक उसी रूप में वापिस आने चाहिए, लेकिन ऐसा तो हो नहीं रहा। लिफाफे को देखकर लगता है कि आप हर बार मेरे पत्रों को पढ़ती हो! फिर लिफाफे को बंद करके उसे नए लिफाफे में वापिस भेज देती हो, यह लिखकर कि पता गलत है! क्यों अनुपमा जी? क्यों करती हो ऐसा? क्या मुझसे कोई गलती हो गई है? क्या मैं आपको पसंद नहीं हूँ? अगर आपको मैं पसंद नहीं हूँ तो एक-दो पत्र लिख ही सकती हो। पत्र लिखकर कह तो सकती हो आकाश, तुम मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं हो। लेकिन मैं जानता हूँ आप मेरी दोस्त हो और मेरी दोस्ती व मेरे प्यार की परीक्षा ले रही हो! बिलकुल आप लीजिए। ये आपका हक है।

अनुपमा जी, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आपका पोस्टल एड्रेस सही है, इसलिए प्लीज... आप ये मत लिखा कीजिए कि पता गलत है। बहुत ही बेसब्री से आपके पत्र के इन्तजार में,

आपका दोस्त,
आकाश

दिनांकः 15 अक्टूबर, शनिवार

हैल्लो अनुपमा जी!

कैसी हो? मेरी प्यारी, दोस्त कुछ तो बताओ? मैं अपनी तैयारियों के सम्बन्ध में इलाहाबाद गया था। मेरे भविष्य के लिए चिन्तित मम्मी-पापा ने कहा जाओ कुछ बनकर आना लेकिन अनुपमा जी, आपके लिए वापिस अपने घर आ गया हूँ। मम्मी-पापा कह रहे थे क्या हुआ? अचानक वापिस क्यों आ गए? मम्मी-पापा तो कितनी बार कह चुके हैं कि इधर कुछ महीनों से मैं गुमसुम-गुपचुप सा रहने लगा हूँ। कुछ दुखित सा-कुछ उदास सा। अब उनको ये कैसे बताता कि मेरा मन तो, मेरी दोस्त अनुपमा के बिना नहीं लग रहा है। जब इलाहाबाद में था तो बार-बार लगता था कि आपने मेरे पत्रों का जवाब दिया होगा। वहाँ तो मेरी एकमात्र सहारा वही आपकी खूबसूरत फोटो थी। और यहाँ भी हैं।

अनुपमा जी, मै आपको बहुत चाहता हूँ। लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि पिछले पाँच-छह महीनों से आप मुझे क्यों नहीं कुछ तबज्जो दे रही हो? जबकि मैं तमीज-तहजीब वाला लड़का हूँ। प्लीज एक बार तो मेरी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा दीजिए। बस एक बार...।

आपकी खुशियों की कामना करते हुए,

आपका दोस्त,

आकाश

दिनांकः 06 नवम्बर, रविवार

हैल्लो अनुपमा जी!

आप भी तो मुझे हाय-हैल्लो कह दिया करो! मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि आप मुझे खारिज क्यों कर रहीं हो? क्यों मेरे पत्रों को बार-बार लौटा रही हो? हर बार लिफाफे पर लिख देती हो-पता गलत है। पता गलत है और पता गलत है! मुझे बताइए कि मुझसे कहाँ गलती हो गई है? सच कह रहा हूँ। मैं अन्दर से अब पूरी तरह टूट चूका हूँ। आपने मुझे बहुत निराश किया है। आप न मेरी दोस्ती को समझ पा रही हो न ही मेरी भावनाओं को। मैं मई से ही आपके लिए बहुत डिस्टर्ब रहा हूँ। कुछ कमजोर भी हो गया हूँ। पढ़ाई में तो बिलकुल भी मन नहीं लगता। किताब के हर पन्ने पर सिर्फ आप दिखती हो। दिन में भी पता नहीं कहाँ खोया रहता हूँ। खीझ भी उत्पन्न होती है। इसी कारण कितनी बार अपने मम्मी-पापा को बुरा भला भी कह दिया है मैंने। अनुपमा जी, मैंने आपको इतने पत्र लिखे हैं लेकिन आपने मेरे किसी भी पत्र का जवाब नहीं दिया। प्लीज एक बार...बस एक बार। मेरी ओर तो देखो! कब तक मेरी परीक्षा लोगी! अरे! मैं तो ऐसा हूँ कि आपके लिए जान भी दे सकता हूँ!

अनुपमा जी, इसलिए यदि अब आपने मुझे पत्र नहीं भेजा या इस पत्र को वापिस लौटाया तो मुझे अपने परिवार की कसम! मैं आपके घर हापुड़ आ जाऊँगा। बस, सात घण्टे के अन्दर आप तक पहुँच जाऊँगा! तब आप मुझे ठुकरा नहीं पाओगी! मैं हण्ड्रेड परसेण्ट श्योर हूँ कि आपका पोस्टल एड्रेस सही है।

ये पत्र अधूरा है। मैं चाहता हूँ कि आप इसी अधूरे पत्र को पूरा कीजिए। इसी अधूरे पत्र में

अपनी बात कहिए! प्लीज अनुपमा जी, प्लीज... आपको मेरी कसम!
आपके जवाब के इन्तजार में,

आपका दोस्त,
आकाश

दिनांकः 05 दिसबंर, सोमवार

प्रिय आकाश, खुश रहो हमेशा।
आशा है घर-परिवार में सब लोग कुशल मंगल होंगें।

प्रिय आकाश, अभी तक मैंने तुम्हारे सारे पत्रों को पढ़ा हैं। इसलिए तुम मेरे लिए खुली किताब हो और कोई शक भी नहीं कि तुम अच्छे लड़के हो। अपने महाविद्यालय के टॉपर रहे हो। अच्छा काम भी करते हो। वहीं, मेरे प्यारे दोस्त, किसी लड़की को जाने बिना, उसकी दोस्ती या कहूँ प्यार के लिए आप बहुत नीचे और पीछे भी चले जाते हो। दुनिया की सबसे अच्छी दोस्त अपनी बहन को भी पीट देते हो। सिर्फ इस बात पर कि उसने तुम्हारा प्रेम-पत्र पढ़ लिया है, जो कि मेरी नजरों में प्रेम पत्र भी नहीं है। अपने माता-पिता पर भी झल्लाते हो। इलाहाबाद से भी वापिस आ जाते हो। प्यार के कारण अपनी पढ़ाई चौपट कर लेते हो। बायोडेटा में दुनिया को बदलने का दावा करने वाले आकाश, तुमको ये क्या हो गया है! न कैरियर का ख्याल, न परिवार का ध्यान। अपनी दयनीय हालत तो देखो।

प्रिय आकाश, तुम्हारे पत्रों को पढ़कर पता चलता है कि पिछले सात-आठ महीनों में तुम बहुत डगमगा गए हो। अब जब तुमने पत्रों के उत्तर न देने पर अनुपमा के घर हापुड़ आने की बात कही तो मुझे लगा कि अब समय आ गया है कि इस अधूरे पत्र को पूरा किया जाए। कलम उठाई जाए।

प्रिय आकाश, ये सच है कि अनुपमा का पोस्टल एड्रेस सौ प्रतिशत सही है। मैं भी हर बार तुम्हारे पत्रों को लेकर अनुपमा के पास जाता रहा, लेकिन वह लड़की पत्र-लेने से इनकार करती रही। मैं तुम्हारे पत्रों को घर आकर पढ़ता था। फिर मूल लिफाफे पर 'पता गलत है', इतना लिखकर उस पत्र को एक नए लिफाफे में रखकर तुमको भेज दिया करता था। हर बार यही सोचकर कि अब तुम पत्र नहीं भेजोगे लेकिन भाई! तुम तो गजब के प्रेमी निकले! तुमने तो पत्रों की झड़ी ही लगा दी। कोई ऐसा भी कर सकता है? हद है भाई!

प्रिय आकाश! अब आगे सुनो! मैंने जिंदगी भर ईमानदारी से काम किया है। मैं आज भी दूर-दराज के गाँव में पत्र लेने-देने जाता हूँ। आँधी तूफान, बारिशों में भी। मेरा कोई भी दिन नागा नहीं जाता है। जानते हो क्यों? हो सकता है उस पत्र में किसी का भविष्य छुपा हो ताकि मुझे, तुम जैसे कुछ करने का जज्बा रखने

वाले युवा और ईमानदार अधिकारी मिल सके, क्योंकि हमारा समाज अभी बहुत अच्छा बन नहीं पाया है। व्यवस्था दमघोंटू है। समाज को अभी बहुत बदलावों से गुजरना है। और वो बदलाव होगा तुम जैसे युवाओं से। गम्भीरता से सोचोगे, तब लगेगा कि तुम तो खुद ही समस्याओं की गढ़ उत्तराखण्ड में रहते हो! तुम्हारे यहाँ के युवाओं की निष्क्रियता के कारण ही उत्तराखण्ड के नेता-मंत्री पहाड़ और मैदान लूट रहे हैं! उत्तराखण्ड की आपदाएँ-समस्याएँ यहाँ के नेताओं-मंन्त्रियों के लिए लंच, ब्रेकफास्ट और डिनर है। क्या कहूँ, लगभग यही स्थिति पूरे भारत की है! आशा है, तुम मेरी बातें गम्भीरता से समझ रहे होगे!

प्रिय आकाश! लड़कियों से दोस्ती करना या प्यार करना बुरा नहीं हैं। बुरा है अखबारी फोटो देखकर प्यार करना और स्वयं के मर जाने की धमकी देना। अपने परिवार को हाशिये पर ही रख देना। बड़ा ही अजीब मामला है तुम्हारा! लेकिन विश्वास करता हूँ कि तुम मुझ अदने से पोस्टमैन की यह बात भी समझ रहे होगे। बातचीत के क्रम में मैं यह भी बता दूँ कि इसे संयोग ही समझा जाए कि मेरा नाम भी आकाश है, और तुम्हारा नाम भी आकाश! बहरहाल, मुझे माफ करना कि मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा, लेकिन कभी-कभी ऐसा काम भी कर लेता हूँ मैं।

अंत में इतना ही कहूँगा कि अब कभी भी अनुपमा को पत्र मत लिखना, उसकी शादी की बात चल रही है, अतः पढ़ाई लिखाई की ओर ध्यान देकर नए जीवन की शुरूआत करो और अपने समय का उद्घोषक बनो।

शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा दोस्त,
आकाश

अगले पल

मिथुन विश्वास
बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर

अगले पल क्या होगा
यह कौन जानता है?
कल क्या होगा
यह कौन कह सकता है?

जीवन एक अनिश्चित यात्रा है,
जिसमें हर पल नया है।
आज जो है वह कल नहीं हो सकता
इसलिए वर्तमान में जीना ही सबसे अच्छा है।

अगले पल क्या होगा
इसकी चिंता मत करो।
वर्तमान में जीओ और आनंद लो।

डॉ. रीता सचान,
एसोसिएट प्रोफ़ेसर,
वनस्पति विज्ञान विभाग

जननी हूँ पत्नी हूँ उच्च अधिकारी हूँ
उससे पहले मैं एक नारी हूँ।
बनना बिखरना बिखर कर संवरना
सिखाया है मंजिल तक पहुँचाना
तभी आज पथ प्रदर्शनकारी हूँ
उससे पहले मैं एक नारी हूँ।

सृष्टि की संरचना नवजीवन जनना
छूट गया कुछ मगर आगे है बढ़ना
झंझावातों से ना कभी हारी हूँ
शक्ति हूँ उससे पहले मैं एक नारी हूँ।

मत करो उपहास सिर्फ करो एहसास
सुन आत्मा की आवाज बदल डालो समाज
नई पीढ़ी को क्या दोगे जवाब
व्यथित हूँ कि मैं अहंकारी हूँ
मैं तो साधारण नारी हूँ।

चाहता है मन बहुत कुछ करना और कराना
कहना सुनना और सुनाना
बदलने और बदल जाना
दुखी हूँ सर्वोच्च शक्ति की इच्छा से हारी हूँ
टूटती हूँ क्योंकि मैं एक नारी हूँ।

बच्चों के लिए चिट्ठी

मंगलेश डबराल

प्यारे बच्चों हम तुम्हारे काम नहीं आ सके। तुम चाहते थे हमारा क़ीमती समय तुम्हारे खेलों में व्यतीत हो। तुम चाहते थे हम तुम्हें अपने खेलों में शरीक करें। तुम चाहते थे हम तुम्हारी तरह मासूम हो जाएँ।

प्यारे बच्चों हमने ही तुम्हें बताया था जीवन एक युद्धस्थल है जहाँ लड़ते ही रहना होता है। हम ही थे जिन्होंने हथियार पैने किए। हमने ही छेड़ा युद्ध। हम ही थे जो क्रोध और घृणा से बौखलाते थे। प्यारे बच्चों हमने तुमसे झूठ कहा था।

यह एक लंबी रात है। एक सुरंग की तरह। यहाँ से हम देख सकते हैं बाहर का एक अस्पष्ट दृश्य। हम देखते हैं मारकाट और विलाप। बच्चों हमने ही तुम्हें वहाँ भेजा था। हमें माफ़ कर दो। हमने झूठ कहा था कि जीवन एक युद्धस्थल है।

प्यारे बच्चों जीवन एक उत्सव है जिसमें तुम हँसी की तरह फैले हो। जीवन एक हरा पेड़ है जिस पर तुम चिड़ियों की तरह फड़फड़ाते हो।

जैसा कि कुछ कवियों ने कहा है जीवन एक उछलती गेंद है और तुम उसके चारों ओर एकत्र चंचल पैरों की तरह हो।

प्यारे बच्चों,
अगर ऐसा नहीं है तो होना चाहिए।

प्रस्तुति : छात्र संपादक

वर दे, वीणावादिनि वरदे!

: सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

वर दे, वीणावादिनि वरदे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद-मंद्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

चित्र : अंतरा साहनी

कृपया अपने विवेक से काम लें

: शिरीष कुमार मौर्य

जो आपका
बिलबिलाते हुए रोना देखते रह सकता है

बिना विचलित हुए
बिना क़रीब आए
बिना सांत्वना का हाथ बढ़ाए

कल वह आपका
न होना भी सह सकता है
इतने ही इत्मीनान से।

पुनर्विचार

मैंने देखा
जीवन के बाहर सुबह हो रही है
पेड़ न जाने किसकी अगवानी में हिल रहे हैं
मेरे सन्नाटे के भीतर
बाहर से न जाने कितनी आवाज़ें आ रही हैं
जिनमें ख़ुशी भी है
और उम्मीद भी

मैंने सोचा
जब सुबह जीवन के बाहर हो रही है
तो दी गई मियाद के बारे में
मुझे दुबारा सोचना होगा...

प्रस्तुति : दिव्या, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

आलेख

सामाजिक सन्दर्भों में कबीर के काव्य की प्रासंगिकता

डॉ. संगीता
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग

प्रत्येक कवि अपने समय और अपने युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होता है। कवि समाज को प्रभावित करता है और समाज से प्रेरणा भी ग्रहण करता है कबीर दास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि है जिन्होंने शताब्दियों की सीमा लांघ, उल्लंघन कर दीर्घ काल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया और सच्चे अर्थों में जनजीवन का नायकत्व किया"[1]

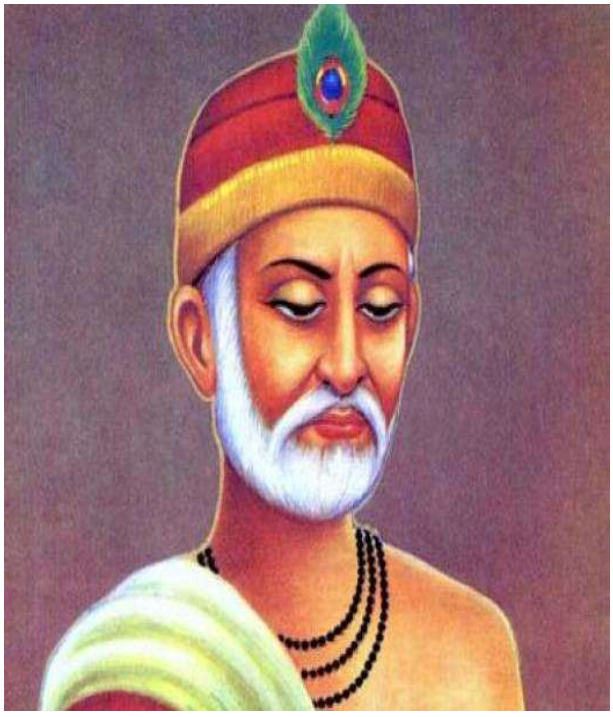

कबीर यह देखकर अत्यन्त दुःखी थे कि धर्म के नाम पर पूरा समाज पाखण्ड और बाह्याचार से ग्रस्त था। धर्म के नाम पर पाखण्ड और मिथ्याचार को बढ़ावा देकर सामान्य जन को दिनभ्रमित किया जा रहा था। समाज में निम्नवर्गो के प्रति मेव-भाव अत्यन्त बढ़ा हुआ था तथा उन्हें कई प्रकार के अधिकारों से वंचित किया गया था। कबीर ने जन्मगत श्रेष्ठता को पूर्णतया अस्वीकार कर दिया। छुआ-छूत का विरोध किया तथा वाह्य आडम्बर और कर्मकांडों पर प्रहार किया। वह कहते हैं-

पाहन पूजे हरि मिलै तो मैं पूजू पहार।
ताते यह चाकी अच्छा पीस खाय संसार।।

कबीरदास की रचनाएँ समाज सुधार की प्रेरणा देती हैं, उसमें सर्वधर्म समन्वय का मंत्र छिपा है।

कबीर सार्वभौम मानव-धर्म के प्रतिष्ठापक थे। कबीर ने अपने साहित्य में हमेशा सामाजिक न्याय की बातें की। परम्परागत रूढ़िवादिता पर उन्होंने गहरा प्रहार किया ।

धर्म के क्षेत्र में संकीर्णता के घोर विरोधी थे। कबीर ने समन्वय की दृष्टि का स्वस्थ रूप से समर्थन किया। सहज सरल साधना पर बल दिया तथा अपनी अनुभूतियों को प्रमाण माना। कबीर साहब कहते हैं-

मैं कहता हो आँखन देखी ।
तू कहता कागद की लेखी ।।

कबीरदास की वाणी मानव-समाज के सामूहिक कल्याण की वाणी है। उनकी दृष्टि में मानववाद ही एक ऐसा स्तर है, जिस पर समाज की व्यवस्था समभाव से रुकी हुई है। कबीर ने अपने एक व्यापक वैचारिक क्रान्ति को जन्म देकर लोक जागरण लाने का प्रयास किया। कवीर का अनुभव ज्ञान उनके सामाजिक प्रतिबद्धत्ता से मिलता, उनके पदों में गहन सामाजिक बोध दिखाई देता है वह अपने समाज की विसंगतियों के प्रति चेतन थे-

सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोए।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोए।।

कबीर लकीर के फकीर नहीं थे बल्कि वे नवीन लकीर बनाने के पक्षधर थे। उनकी दृष्टि में नीच वह है जो मानव धर्म को नहीं अपनाता है। कबीर ने भोगवाद का विरोध किया। उनकी मान्यता है कि वास्तविक पवित्रता मानसिक विकारों का त्याग है, शेष सब दिखावा है।

कबीर ने अपने धार्मिक दर्शन के द्वारा विखण्डित समाज में धार्मिक, सामाजिक एकता को स्थापित करने का महान कार्य किया। कबीर अपने समय में नारी की सामाजिक स्थिति को देखकर दुःखी थे। कबीर गरीब शोषित अपमानित निम्नवर्ग की और से खड़े हो गए और निम्नवर्ग में न्भी आत्म सम्मान का भाव जगाया। कबीर यथार्थबोध केरचनाकार है। यथार्थ बोध व्यंग्य, काल-बोध की तीव्रता और गहरी मानवीयता करुणा के कारण कबीर आधुनिक भावबोध के बहुत निकट लगते हैं। वह अपने युग के सारे मिथ्याचार, कर्मकाण्ड, अमानवीय हिंसा पर-पीड़ा को चुनौती देते हैं।

कबीर की कविता में सन्देश देने की प्रवृत्ति प्रधान है। इन सन्देशों में आनेवाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा, पथप्रदर्शन तथा संवेदना की भावना सन्निहित है। पथभ्रष्ट समाज को उचित मार्ग पर लाना ही उनका प्रधान लक्ष्य है।

"कबीर जन्म से विद्रोही, प्रकृति से समाज सुधारक कारणों से प्रगतिशील दार्शनिक और आवश्यकतानुसार कवि है। अपने महान सन्देशों की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें काव्य को माध्यम बनाना पड़ा।"[2]

कबीर लालच का विरोध करते हैं, वह अहं-अहंकार का पूर्ण विर्सजन सम्पूर्ण समाज में देखना चाहते हैं थे। वे समाज को साम्यता की दृष्टि से देखना चाहते थे जिसमें धन संचय को कहीं स्थान नहीं मिलता हो। कबीर ने साई इतना साई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय में विश्वास जताया। उन्होंने संसार की नश्वरता के लिए पानी के बुलबुले का उदाहरण दिया।

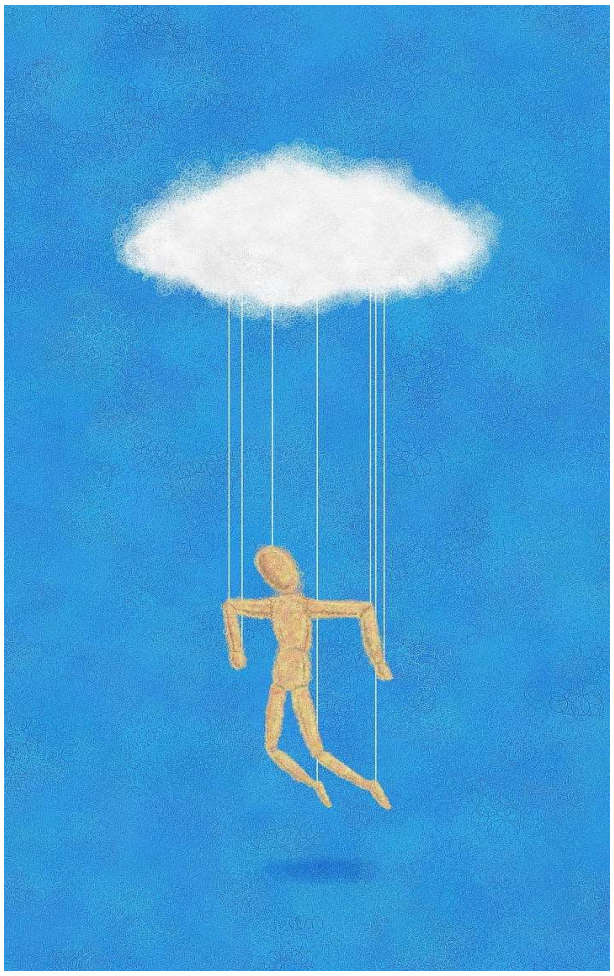

निष्कर्षतः कबीर की निर्भयता, आत्मविश्वास प्रेम व शान के मिश्रित दृष्टिकोण कशास्त्रों एवं कर्मकांडों के विरोध अनुभवारित अभिव्यक्ति तथा सामाजिक चेतना ने सिस मिस निस्संदेह उन्हें अपने युग प्रर्वतक के रूप में स्थापित किया है। कबीर ने अपने युग में जीते हुए जिन समस्याओं को उठाया है वे कालजयी है, उनकी प्रासंगिकता आज के युग में बढ़ गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या 118
2. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या 118

आयुर्वेद जीवन को संतुलित करने का विज्ञान है : डॉ. कौशिक

समाजशास्त्र विभाग के तत्वाधान में उमंग-हैल्थ एंड हैप्पीनेस क्लब द्वारा दिनांक 28 अगस्त 2023 को 'स्वास्थ और आयुर्वेद' विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में विषय-विशेषज्ञ के रुप में आयुर्वेदाचार्य डॉ. रविंदर कौशिक ने छात्र-छात्राओं को संम्बोधित करते हुए वर्तमान खानपान और स्वास्थ पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद विशेषकर जीवन को संतुलित करने का विज्ञान है।

वहीं मर्म विशेषज्ञ डॉ. जितेन्द्र यादव ने स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने में एक्यूपंक्चर पद्धति की महत्ता पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

महाविद्यालय की प्रभारी में डॉ. रीता सचान ने दोनों विषय विशेषज्ञों को तुलसी एवं पुष्प के पौधों से स्वागत किया, और अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान में स्वास्थ के प्रति जागरूकता जीवन जीने की प्राथमिक शर्त है। स्वास्थ्य संबंधी ऐसे आयोजन हमें ऊर्जा प्रदान करते हैं। कार्यशाला में डॉ. मनुहार आर्य, डॉ. अतुल उप्रेती, डॉ. अतीश वर्मा, डॉ. सूरजपाल, डॉ. कांडपाल, डॉ. विकास रंजन, डॉ. प्राची फर्त्याल, डॉ. खेमकरण सोमन, डॉ. वंदना, डॉ. संगीता, डॉ. पूजा, डॉ. सन्ध्या चौरसिया, डॉ. ललित कुमार, श्री संजय बिष्ट, श्री हितेंद्र शर्मा, श्री कैलाश, डॉ. योगेश पाण्डेय, छात्रसंघ अध्यक्ष दीपक, सचिव पूजा शर्मा, काजल, रितिका, बलविंदर कौर और श्री सतेंद्र यादव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार सैनी ने किया।

रिपोर्ट : डॉ. पूजा रानी

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है : प्रो. पांडे

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में हिंदी विभाग द्वारा बहुत धूमधाम से हिंदी दिवस [14 सितम्बर] मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. के. के. पांडे ने कहा कि भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। इसकी उपेक्षा से देश अपने अस्तित्व को खो देता है। जन्म लेने के बाद बच्चा सर्वप्रथम अपनी मातृभाषा में ही बोलना और सोचना शुरू करता है। अपनी भाषा में बात करने के लिए किसी प्रकार का दवाब नहीं होता। यही अपनी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता होती है।

छात्राओं में टीना, रानी, अंशु, पूजा, अंशु, रानी, जसलीन कौर, दिव्या, संगीता, सुहानी, पूजा और राखी ने हिंदी के भविष्य की और रोजगार की भाषा बनाने की बात की, तत्पश्चात सभी ने हिंदी कवियों की कविताओं का पाठ किया।

इस क्रम में बी.ए. प्रथम सेमेस्टर की छात्र जशनप्रीत कौर ने कहा कि हिंदी के विकास के लिए युवाओं को आगे होगा, और इसे दैनिक जीवन में उपयोग करते हुए रोजगारपरक बनाना होगा ताकि यह भाषा ज़मीनी तौर पर जनता के साथ जुड़ सके। कार्यक्रम में हिंदी दिवस पर अपनी बात रखने वाले छात्र-छात्राओं को प्राचार्य के हाथों पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर हिंदी विभाग प्रभारी डॉ. सन्ध्या चौरसिया, डॉ. मनुहार आर्य, डॉ. सूरजपाल, डॉ. कांडपाल, डॉ. अतुल उप्रेती, डॉ. अतीश वर्मा, डॉ. प्राची फर्त्याल, डॉ. खेमकरण सोमन, डॉ. वंदना, डॉ. संगीता, डॉ. दर्शना पन्त, डॉ. ललित कुमार, श्री संजय बिष्ट, श्री हितेंद्र शर्मा, श्री कैलाश और डॉ. योगेश पाण्डेय आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन और विषय प्रवर्तन हिंदी विभाग की डॉ. संगीता ने किया।

रिपोर्ट : डॉ. खेमकरण 'सोमन'

जनता की शक्ति संविधान में निहित होती है: सचिन कुमार पाठक

राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस' [15 सितम्बर] पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित, और उसके उपरांत अतिथियों का बैज अलंकरण से स्वागत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री सचिन कुमार पाठक ने छात्र-छात्राओं को बहुत विस्तार से लोकतंत्र, राजतंत्र और लोकतंत्र में अंतर, लोकतांत्रिक प्रक्रिया और न्यायव्यवस्था के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनता की शक्ति संविधान में निहित होती है अतः देश में संविधान ही सर्वोच्च शक्ति है। अपनी विशेषताओं के कारण ही विद्वानों का मानना है कि भारत का संविधान विश्व का सर्वोत्तम संविधान है। किसी देश का लोकतंत्र संविधान के कारण और संविधान लोकतंत्र के कारण प्रभावी होता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं प्रभारी प्राचार्या प्रो. रीता सचान ने लोकतंत्र, चुनाव और मत पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि लोकतंत्र के विकास में कर्तव्य और अधिकार की बड़ी भूमिका होती है।

कार्यक्रम में अंकित, राखी, निशा और मेघा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर 'अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया, जिसमें बी.ए. प्रथम सेमेस्टर की

लता प्रथम, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर की नेहा द्वितीय और बी.ए. तृतीय वर्ष की निशा तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबंध प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. अनिल सैनी थे। कार्यक्रम में डॉ. अतुल उप्रेती, डॉ. संध्या चौरसिया, डॉ. मनुहार आर्य, श्री कुलदीप कुमार, डॉ. खेमकरण सोमन, डॉ. सूरजपाल, डॉ. विकास रंजन, डॉ. पूजा रानी, डॉ. वंदना, डॉ. अतीश वर्मा, डॉ. ललित कुमार, डॉ. मनप्रीत सिंह, डॉ. आदर्श चौधरी, डॉ. प्रदीप दुर्गापाल श्री संजय बिष्ट, श्री हितेंद्र शर्मा और श्री कैलाश उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान विभाग के श्री रोहित कुमार ने किया।

रिपोर्ट : डॉ. वंदना

विजय दिवस का आयोजन

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में एन.एस.एस., एन.सी.सी. और स्वीप के तत्वाधान में तिरपनवाँ विजय दिवस [16 दिसंबर] बहुत धूमधाम से मनाया गया।

हिंदी विभाग के डॉ. खेमकरण सोमन ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए भारत-पाकिस्तान का युद्ध, शेख मुजीबुर रहमान, मुक्ति वाहिनी सेना, बांग्ला देश का निर्माण, और उसके निर्माण में भारत, फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ और लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा की भूमिका पर बहुत विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भाषा, अस्तित्व, पहचान और सुरक्षा को लेकर तेरह दिनों तक चले इस युद्ध में फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान को हराकर सोलह दिसंबर 1971 को विजय फतह की। इस जीत के बाद विश्वभर में भारत को देखने और उसके विषय में सोचने समझने के नजरिया में भारी परिवर्तन हुआ। विजय दिवस उसी 16 दिसंबर की महाविजय का गरिमापूर्ण भव्य आयोजन और सैन्य टकराव का पवित्र स्मरण है।

प्रभारी प्राचार्या डॉ. मनुहार आर्य ने कहा कि आज का दिन वीर सपूतों के बलिदान, शौर्य स्मरण का और उन्हें श्रद्धांजलि देने का है। इस अवसर पर सोनम, शीतल, संजना, आरती, नेहा, शिवानी, रितिका, पलक, मनदीप कौर, सायबा अली, रीना कौर, और संध्या सागर द्वारा देशभक्ति गीतों पर मनभावन प्रस्तुति दी गई। बीए प्रथम सेमेस्टर की शुभांशी ने देशभक्ति से ओतप्रोत भाषण देकर देकर सबका मन जीता। अंत में डॉ. संजय कुमार बिष्ट के सहयोग से संसद टीवी द्वारा निर्मित विजय दिवस से संबंधित वीडियो भी दिखाई गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. खेमकरण सोमन ने किया।

इस अवसर पर एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. मनप्रीत सिंह, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. बीके जोशी, डॉ. जय सिंह, डॉ. सूरजपाल सिंह, डॉ. अतुल उप्रेती, डॉ. प्रदीप दुर्गापाल, डॉ. विकास रंजन, डॉ. हितेंद्र शर्मा, सीनियर अंडर ऑफिसर असप्रीत सिंह, सीनियर अंडर ऑफिसर सोनम, अंडर ऑफिसर खुशी सुंदरियाल, एन.सी.सी. सहायक हरीश बुंगला और विकास कुमार उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : डॉ. हितेंद्र शर्मा

नैक [NAAC] द्वारा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर को उच्च ग्रेड

देहरादून। नैक का बी प्लस प्लस एक्रीडिटेशन प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा मंत्री की ओर से बाजपुर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय को सात लाख का पुरस्कार प्रदान किया गया। विदित हो कि नैक में उत्तराखंड प्रदेश के अंदर राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, जिला- ऊधम सिंह नगर ने उच्च ग्रेड प्राप्त किया।

बुधवार [24 जनवरी 2024] को देहरादून में आयोजित देवभूमि उद्यमिता कार्यशाला में सर्वश्रेष्ठ ग्रेड प्राप्त करने पर बाजपुर पीजी कॉलेज के प्राचार्य प्रो. के.के. पांडे, नोडल अधिकारी डॉ. आदर्श चौधरी को उच्च शिक्षा मंत्री धन सिंह रावत, उच्च शिक्षा सचिव शैलेश बगौली ने सात लाख रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

प्राचार्य डॉ. के.के. पांडे ने बताया कि बाजपुर डिग्री कॉलेज की स्थापना 1996 में हुई थी। वर्तमान में कॉलेज में बीए, बीकॉम बीएससी, एमए, एमकॉम, एमएससी और पीजी डिप्लोमा इन योगा के कोर्स कुमाऊं विवि के संबद्धता के अनुसार संचालित है। बीते 23 और 24 अक्तूबर 2023 को नैक टीम ने पीजी कॉलेज का भ्रमण कर निर्धारित सात मापदंडों को परखा। टीम ने विद्यार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों, अभिभावकों से अलग-अलग बातचीत की थी। महाविद्यालय को प्रथम प्रयास में ही 2.85 अंकों के साथ बी प्लस प्लस ग्रेड मिला जो गौरव की बात है। उन्होंने महाविद्यालय की इस उपलब्धि पर विद्यार्थियों, अभिभावकों और स्टाफ आभार जताया है।

रिपोर्ट : डॉ. संजय सिंह बिष्ट

प्राचार्य प्रो. के.के. पांडे और नोडल अधिकारी डॉ. आदर्श चौधरी को पुरस्कार भेंट करते उच्च शिक्षा मंत्री श्री धन सिंह रावत।

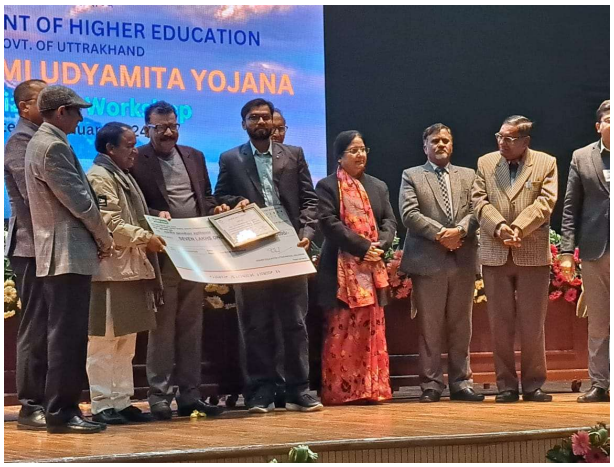

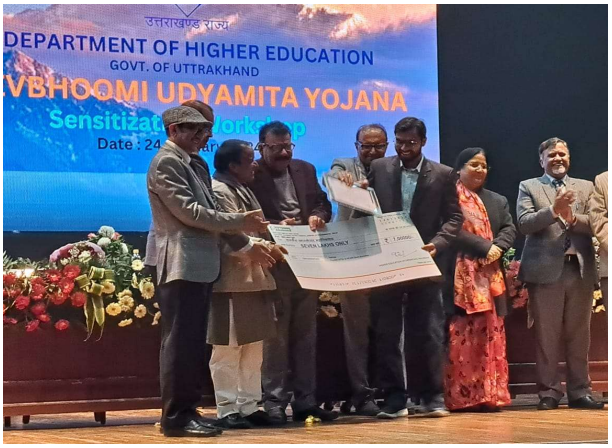

आलेख

खुशहाल जीवन का रास्ता : योग

डॉ. रंजीत सिंह
योग विज्ञान विभाग

वर्तमान युग को स्पर्धा का युग कहा जाए तो कहना गलत नहीं होगा, क्योंकि हर एक क्षेत्र में आगे बढ़ने की चाह को लेकर स्पर्धा का वातावरण बना हुआ है, चाहे वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो। मनुष्य निरंतर उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ने की चाह में स्वयं के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक चारों रूप से अपने स्वास्थ्य को अनदेखा करता चला जा रहा है। सर्वोत्तम व आगे बढ़ने की होड़ हमारे व छात्रों के भविष्य के लिए एक अनदेखा खतरा बनता जा रहा है, और अब यह होड़ स्कूलों व महाविधालयों में भी अपनी पकड़ बनाती चली जा रही है।

प्रत्येक छात्र के लिए शिक्षा जीवन में सबसे ज्यादा अहम होती है। प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा व स्वस्थ भविष्य देना चाहते है। प्रथम आने की चाह छात्रों को प्रतियोगिता या स्पर्धा के जाल में फंसा देती है, जिसके फलस्वरूप छात्रों में मानसिक विकार आदि उत्पन्न होने लगते है जो आगे चलकर अनेक शारीरिक विकारों का रूप ले लेते है, लेकिन सिर्फ घबराने मात्र से कुछ प्राप्त नही होगा इसके निवारण हेतु हमें स्वम् को व अपने सम्पूर्ण परिवार को योग के साथ जोड़ना होगा। योग के माध्यम से उपरोक्त सभी समस्याओं से आसानी से बचा जा सकता है एवं जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है। तो आईए योग को जानें -

योग का सामान्य अर्थ मिलने, जुड़ने या एक होने से लिया जाता है, योग एक प्राचीन शास्त्र है जो आदि युग से हमारे समय तक चला आ रहा है। आदि युग में योग को आत्मा और परमात्मा के मिलन के रूप में व आध्यात्मिक उन्नति के साधन के रूप में देखा जाता था। संतों, ऋषियों और आध्यात्मिक गुरुओं ने इसे मनन और ध्यान के उपाय के रूप में अपनाया जो उन्हें यह आंतरिक शांति की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुआ। हालांकि, आधुनिक युग में योग को न केवल आत्मिक विकास का साधन माना जाता है, बल्कि इसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और अध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए भी एक महत्वपूर्ण और प्रभावी उपाय के रूप में देखा जाता है। प्राचीन काल में योगविद्या केवल गुरु और शिष्य के मध्य एक गोपनीय विद्या के रूप में थी, परन्तु वर्तमान समय में योग हर तीसरे व्यक्ति की जीवनशैली का हिसा बनता जा रहा है। योग अब योगशिक्षा व योगासन खेल के माध्यम से भी जन जन तक अपनी पहुँच बना रहा है, योग शिक्षा के माध्याम से छात्रों को शारीरिक व मानसिक

समृद्धि प्राप्त होती है एवं छात्रों में स्थिर मानसिकता, उच्च स्तर की ध्यान क्षमता और सामर्थ्य में भी बढ़ोतरी होती है। योग छात्रों को न केवल शारीरिक लाभ प्रदान करता है, बल्कि मानसिक चेतना और आध्यात्मिक साधना में भी मदद करता है। आधुनिक युग में योग के विभिन्न प्रकार जैसे कि हठयोग, अष्टांग योग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, सप्तांग योग आदि का प्रचलन भी काफी बढ़ा है, जो लोगों को स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने में मदद करता है एवं मनुष्य के सभी आयामों को पुष्ट करता है।

सप्तांग योग के अनुसार षठकर्म क्रियाएं करने से सम्पूर्ण शरीर की शुद्धि, आसनों के अभ्यास से शरीर में मजबूती, मुद्राओं के अभ्यास से स्थिरता, प्रत्याहार के अभ्यास से धैर्य, प्राणायाम के अभ्यास से हल्कापन, ध्यान के अभ्यास से आत्म-साक्षात्कार और समाधि से निर्लिप्तता की प्राप्ति होती है। सप्तांग योग का अभ्यास मनुष्य को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक चारो प्रकारों से संतुलित एवं समृद्ध बनाने में मदद करता है।

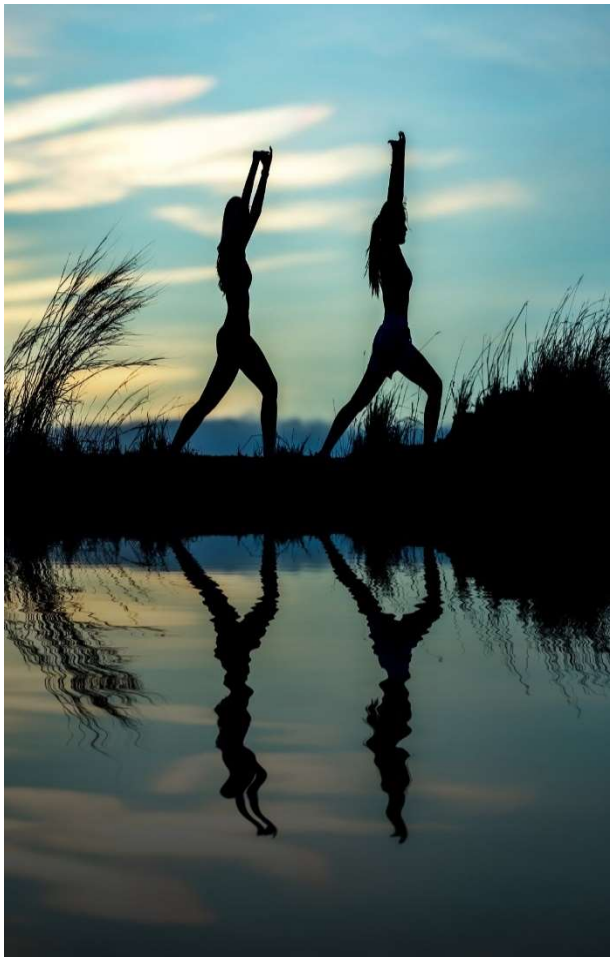

भारत सरकार के द्वारा योग को अब योगासन खेल के रूप में भी स्वीकार कर लिया गया है जिसमे योगासन खिलाड़ी योगासन खेल में प्रतिभाग करके अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य का प्रदर्शन करके मैडल पा सकते है और भविष्य में उसका पूर्ण लाभ उठा सकते है।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के अथक प्रयासों के द्वारा आज भारत देश सहित विश्व के अधिकतर देशों में 21 जून को योगदिवस के रूप में जाना व मनाया जाता है। इस दिन हमें योग के महत्त्व को समझते हुए इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प लेना चाहिए। योग एक ऐसा अभ्यास है जो समरसता, शान्ति और सामुदायिकता को प्रोत्साहित करता है योग दिवस के माध्यम से हम विश्वभर में एकजुटता का संदेश प्रसारित कर सकते हैं।

00

संपादकीय...

डॉ. खेमकरण 'सोमन'

नएपन और नवाचार के घोर अभाव के परिणामस्वरूप वर्तमान में अधिकांश लोग बोरियत जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त हैं। विचार करें तो यह बोर होना, एक दिन का परिणाम नहीं अपितु इसके पीछे एक लंबा समय लगा है। लंबे समय तक नयापन, नवाचार और सृजनात्मक कार्य से दूर रहने के कारण मनुष्य का दिमाग इस कदर बंजर, थेथर और खराब हो गया है कि वह अब अपने जीवन में रस यानी आनंद भरने के लिए निंदा रस, चुगली, हरामखोरी, किसी के विषय में अश्लील टिप्पणी करके या किसी के विषय में अनर्गल बोलकर इसकी भरपाई करता है। अब तो स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि चार पढ़े-लिखे लोग एक जगह एकत्रित हुए नहीं कि किसी की बुराई, निंदा, और चुगली प्रारंभ। जबकि उनके मध्य भूख, प्यास, गरीब, बेरोजगारी, युद्ध, बलात्कार, निराशा, आत्महत्या, शिक्षा, स्वास्थ्य और देश-समाज के विभिन्न मुद्दे हैं, पर इन विषयों पर चिंतन हाशिये पर दिखती है।

विचार करें तो ये चिंताजनक परिस्थितियाँ एक-दो वर्षों की उपज नहीं अपितु दशकों का परिणाम और निष्कर्ष हैं। यही कारण है कि वर्तमान कालावधि में अच्छे शिक्षण संस्थानों से शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद नई पीढ़ी जहाँ एक तरफ सूचना संचार और तकनीकी में बहुत आगे बढ़ रही है, वहीं दूसरी तरफ जीवन समाज, सरोकार और एकजुटता के स्तर पर अल्प ज्ञान संपत्ति तक सीमित। आज की पीढ़ी एक भाग बहुत आगे बढ़ गया है, तो दूसरा भाग वैज्ञानिक समझ को दरकिनार कर छल-कपट, और एकतरफा सोच का दास बन गया है।

00

वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या मनुष्य के सिर-आँखों पर बैठी हुई है। चाहे वह वैश्विक हो, मानसिक या शारीरिक, वह मनुष्य के सिर आँखों, दिमाग पर बैठी हुई है। वैश्विक संदर्भ में विचार करें तो ये समस्या भी एक दिन की उपज नहीं। आज परमाणु बम की छत्रछाया में लगभग डेढ़ सौ छोटे-बड़े युद्धों से घिरी पृथ्वी के लिए मनुष्य कितना सोच पा रहा है, उसकी पोल ये युद्ध ही खोल दे रहे हैं। अब तो युद्ध और पलायन का उल्लेख करना भी ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी सोच से बाहरी दायरे का मुद्दा ले बैठे हैं क्योंकि इस सन्दर्भ में कुछ भी नहीं किया जा सकता।

दूसरी बात, उत्तर औद्योगिक समाज ने अपनी आवश्यकता और चकाचौंध इतनी बढ़ा ली है कि पढ़ा-लिखा नागरिक भी इसके आगे हाथ जोड़कर खड़ा है। इस प्रक्रिया में मनुष्य चाहे वह गरीब हो या अमीर, पैसा, पैसा, पैसा करते हुए भाग रहा है, और इसी के लिए मर रहा, मार रहा, और जी रहा है। मनुष्य ने जब

अपने संघर्ष के फलस्वरूप सभ्य बनना शुरू किया होगा, तब उसने कभी सोचा भी न होगा कि एक दिन पैसा ही उसके सम्मान और अपमान का द्योतक हो जाएगा। पैसा सहयोग की अपेक्षा वियोग का जन्मदाता हो गया है। बहरहाल।

जूनियर एनटीआर की फिल्म 'जनता गैराज' कई मामलों में मनुष्य को पर्यावरण चेतना और विचार से भर देती है। फिल्म का नायक जूनियर एनटीआर पर्यावरण विज्ञान का छात्र है। जुनूनी इतना कि पर्यावरण को बचाने के लिए किसी से भी लड़-भिड़ जाता है। इस फिल्म के आलोक में विचार करें तो आज का छात्र केवल विषय पढ़ रहा होता है ताकि वह शीघ्रता से नौकरी पा सके। लाख प्रयत्न के उपरांत भी न शिक्षक, न संस्थान, न संस्था और न ही समाज उसके अंदर पर्यावरण विज्ञान का अद्ययन करते हुए पर्यावरणीय चेतना, समाजशास्त्र का अद्ययन करते हुए सामाजिक चेतना, राजनीति विज्ञान का अद्ययन करते हुए राजनीतिक चेतना, मनोविज्ञान का अद्ययन करते हुए मनोवैज्ञानिक चेतना, इतिहास का अद्ययन करते हुए ऐतिहासिक चेतना, विज्ञान का अद्ययन करते हुए वैज्ञानिक चेतना, विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का अद्ययन करते हुए सांस्कृतिक चेतना, कहने का आशय है कि किसी भी विषय का अद्ययन करते हुए वह उस विषय की चेतना से भी भर उठे। जैसा कि 'जनता गैराज' में एनटीआर की जीवंत भूमिका है।

00

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, अर्थात 21 फरवरी के सुन्दर अवसर पर 'समावेश' का यह अंक आपको सौप रहा हूँ। इसमें छात्र- छात्राओं और महाविद्यालय के शिक्षकों ने लिखा, और अपना सहयोग दिया। मैं उन सबके रचनात्मक अवदान और सहयोग की मानसिकता के प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं विशेषरूप से कृतज्ञ हूँ अपने महाविद्यालय के सरलमना विद्वान प्राचार्य प्रो. के.के. पांडे जी का, जिन्होंने छात्र-छात्राओं के मध्य पढ़ने-लिखने की संस्कृति विकसित करने एवं 'समावेश' के प्रकाशन के लिए निरंतर मुझे प्रोत्साहित किया। हालाँकि मुझे प्रतीत हो रहा है कि 'समावेश' को जो स्वरुप मुझे देना चाहिए, वह अभी मैं दे न सका। एक प्रकार से अपना दायित्व भी सही ढंग से निभाने में असफल रहा। ऐसे समय में पूर्व प्रधानमंत्री और कविहृदय अटल बिहारी बाजपेयी जी के शब्दों में इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि- हार नहीं मानूँगा, रार नई ठानूँगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ,
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ।

बहरहाल, 'समावेश' के इस षटमासिक में जो कमियाँ रह गई हैं, उन्हें 'समावेश' के दूसरे अंक में छात्र- छात्राओं की प्रतिभा, शिक्षकों की जीवंत भागीदारी और विविधताओं के साथ, दूर करने का प्रयत्न करूँगा। इसी उत्साह के साथ-

सादर

डॉ. खेमकरण 'सोमन'